Sanginee

संगिनी

Smile... Stride... Scintillate

जनवरी - मार्च 2023

नालको NALCO

Editor-in-Chief
Sasmita Patra, President
NALCO Mahila Samiti

Editorial Board
Shaswati Mohanty
Swayamprava Rath
Himanshu Rai

Co-ordinator
Kamana Singh

Design concept
Bibhu Prasad

January to March

प्रकाशक
नालको महिला समिति के
संयुक्त प्रयास से राजभाषा प्रकोष्ठ,
नेशनल एल्यूमिनियम कंपनी लिमिटेड
निगम कार्यालय, भुवनेश्वर

संपादकीय

हमने हाल ही में महिला सशक्तिकरण की दिशा में अपनी प्रतिबद्धता को प्रदर्शित करते हुए अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया। वस्तुत: महिला सशक्तिकरण मात्र आर्थिक सशक्तिकरण ही नहीं अपितु सर्वाधिक स्वास्थ्य तदुपरांत शैक्षणिक व जागरूक सशक्तिकरण के मार्ग से होते हुए सम्पूर्ण समाज के सशक्तिकरण की परिकल्पना है। अतएव आवश्यक है कि हम महिला सशक्तिकरण की परिकल्पना को वृहद स्तर पर देखें। दूसरी तरफ़ महिलाओं के स्वास्थ्य की आधारशिला ही स्वस्थ समाज की आधारशिला होगी। अन्य शब्दों में, एक स्वस्थ महिला ही सशक्त परिवार, सशक्त समाज के निर्माण में अपना सर्वोत्तम योगदान दे सकती है। किंतु वहीं व्यवहारिक स्तरीय चिंतन से हम देखते हैं कि एक सामान्य भारतीय परिवार की नारी परिवार एवं समाज के कार्यों में व्यस्त रहते हुए स्वयं के स्वास्थ्य की अनदेखी करती है। यह स्थिति निम्न व मध्यम वर्गीय परिवार में और भी दुष्कर हो जाती है। यहाँ स्त्रियों को चिकित्सीय परामर्श हेतु भी अपने परिवार के पुरूषों की अनुमति लेनी होती है, जो कई बार घरेलू उपचार तक ही सीमित रह जाता है। जबकि अपेक्षित है कि महिलाएँ अपने कर्तव्य का पालन करते हुए निज स्वास्थ्य की देखभाल की देखभाल भी भली प्रकार से करें एवं स्वयं संतुलित आहार ग्रहण करें तथा परिवार को भी संतुलित आहार ही खिलाएँ।

भारतवर्ष में प्राचीन काल से ही महिलाओं को प्रतिष्ठित एवं सम्माननीय स्थान प्रदान किया गया है। आधुनिक संदर्भ में, आवश्यकता है कि हम अपने मनीषियों की परिकल्पना को साकार करें। आज के समय में यह परिकल्पना सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक और स्वास्थ ढाँचें में महिलाओं की स्थिति को मजबूत करने की माँग करता है। इस प्रकार सशक्तिकरण का लक्षित परिणाम सशक्त महिला के परिकल्पना के साथ स्वस्थ, सुरक्षित व सुदृढ़ परिवार की सकल्पना को साकार करता है।

महिला अपने परिवार के प्रशस्ति के मार्ग को प्रकाशित करती है। हर देश और हर क्षेत्र तब लाभान्वित होता है, जब महिलाएँ स्वस्थ, शिक्षित एवं सशक्त होती हैं और जीवन के सभी पहलुओं में पूर्ण और समान रूप से भाग ले सकती हैं।

संगिनी का यह वर्तमान अंक स्त्री के वंदनीय रूप माँ शारदा एवं विद्या की देवी माँ सरस्वती से प्रारम्भ होकर समाज के रंगोत्सव 'होली' की झलक प्रदर्शित करते हुए महिला सशक्तिकरण के हर्ष की चंद पंक्तियों को आपके समक्ष रखते हुए हमारे समाज के आदर्श स्वामी विवेकानन्द एवं नेता जी संकल्पनाओं से हमें परिचित कराता है। जो हमें स्मरण कराते हैं कि भारत महिलाओं को सशक्त बनाने में एक लम्बा सफ़र तय कर चुका है, लेकिन अभी कई मील के पत्थर पार करने बाक़ी हैं। अंत में, मैं आप सब पाठकों से कहना चाहूँगी कि "स्वस्थ स्त्री" हमारे "स्वस्थ समाज" का एक अभिन्न अंग है और "नारी शक्ति" को सुदृढ़ करते हुए ही हम "शक्तिशाली राष्ट्र" की परिकल्पना कर सकते हैं।

सस्मिता पात्रा

ସଂପାଦକୀୟ

ଆମେ ଏବେ ମହିଳା ସଶକ୍ତିକରଣ ଦିଗରେ ଆମର ପ୍ରତିବଦ୍ଧତା ପ୍ରଦର୍ଶିତ କରି ଅନ୍ତରାଷ୍ଟ୍ରୀୟ ମହିଳା ଦିବସ ପାଳନ କରିସାରିଛୁ। ବାସ୍ତବରେ ମହିଳା ସଶକ୍ତିକରଣ କେବଳ ମହିଳାଙ୍କ ଆର୍ଥିକ ସଶକ୍ତିକରଣ ନୁହେଁ। ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ, ଶିକ୍ଷାର ଜାଗରଣ, ତଦୁପରି ସମ୍ପୂର୍ଣ୍ଣ ସମାଜର ସଶକ୍ତିକରଣର ପରିକଳ୍ପନାର ଏକ ରୂପରେଖ ଅଟେ। ମହିଳାଙ୍କ ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟର ଆଧାରଶୀଳା ହିଁ ସମଗ୍ର ସମାଜର ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟର ଆଧାରଶୀଳା କହିଲେ କିଛି ଅତ୍ୟୁକ୍ତି ହେବ ନାହିଁ। ଅନ୍ୟ ଶବ୍ଦରେ କହିଲେ ଏକ ସୁସ୍ଥ ମହିଳା ହିଁ ଏକ ସୁସ୍ଥ ପରିବାର ଏବଂ ସଶକ୍ତ ସମାଜ ନିର୍ମାଣରେ ନିଜର ସର୍ବୋତ୍ତମ ଯୋଗଦାନ ଦେଇପାରିଥାଏ। କିନ୍ତୁ ଯଦି ବ୍ୟବହାରିକ ସ୍ତରରେ ଚିନ୍ତା କରାଯାଏ ତେବେ ସାଧାରଣ ଭାରତୀୟ ପରିବାରର ନାରୀ, ପରିବାର ଓ ସମାଜର କାର୍ଯ୍ୟରେ ବ୍ୟସ୍ତ ରହି ନିଜ ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ ପ୍ରତି ଅବହେଳା କରିଦେଇଥାଏ। ଏହି ସ୍ଥିତି ନିମ୍ନ ମଧ୍ୟବିତ୍ତ ଓ ମଧ୍ୟବିତ୍ତ ପରିବାରରେ ଆହୁରି ଭୟଙ୍କର ରୂପ ନେଇଥାଏ।

ଏପରିକି ଚିକିତ୍ସକଙ୍କ ପରାମର୍ଶ ସତ୍ତ୍ୱେ ବି ସେମାନଙ୍କୁ ପୁରୁଷଙ୍କ ତଥା ଘରର ମୁରବିଙ୍କ ଅନୁମତି ନେବାକୁ ପଡ଼ିଥାଏ ଓ ତାହା ଗୃହ ଉପଚାର ଯାଏ ହିଁ ସୀମିତ ରହିଯାଇଥାଏ। ଆଶା କରାଯାଏ ଯେ ନାରୀ ନିଜର କର୍ତ୍ତବ୍ୟ ସମ୍ପାଦନ କରିବା ସହିତ ନିଜର ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ ପାଇଁ ମଧ୍ୟ ଯତ୍ନଶୀଳ ହେବା ଉଚିତ। ସେ ନିଜେ ସନ୍ତୁଳିତ ଆହାର ଖାଇବା ଉଚିତ୍ ଓ ପରିବାରକୁ ମଧ୍ୟ ସନ୍ତୁଳିତ ଆହାର ଦେବା ଉଚିତ।

ଆମ ଭାରତବର୍ଷରେ ପ୍ରାଚୀନ କାଳରୁ ହିଁ ମହିଳାଙ୍କୁ ଅତ୍ୟନ୍ତ ସମ୍ମାନନୀୟ ଓ ପ୍ରତିଷ୍ଠିତ ସ୍ଥାନରେ ସ୍ଥାପିତ କରାଯାଇଛି। ଆଧୁନିକ ଭାରତବର୍ଷରେ ଏବେ ସମୟ ଆସିଛି କି ଆମେ ଋଷି, ମନୀଷିଙ୍କ ପରିକଳ୍ପନାକୁ ସାକାର ରୂପ ଦେବା। ଏବେ ଆମେ ସାମାଜିକ, ଆର୍ଥିକ, ରାଜନୈତିକ ସ୍ତରରେ ମହିଳାଙ୍କ ସ୍ଥିତିକୁ ମଜବୁତ କରିବାର ସମୟ ଆସିଛି। ନାରୀ ସଶକ୍ତିକରଣର ଲକ୍ଷ୍ୟ ସଶକ୍ତ ମହିଳାଙ୍କ ପରିକଳ୍ପନା ସହିତ ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ, ସୁରକ୍ଷା ତଥା ସୁଦୃଢ଼ ପରିବାରର ପରିକଳ୍ପନାର ଏକ ସାକାର ରୂପ ମାତ୍ର।

ମହିଳା ନିଜ ପରିବାରର ପ୍ରଶସ୍ତି ମାର୍ଗକୁ ପ୍ରକାଶିତ କରିଥାଏ। ଯେ କୌଣସି ଦେଶ ହେଉନା କାହିଁକି ସବୁ କ୍ଷେତ୍ରରେ ସେତେବେଳେ ଲାଭାନ୍ୱିତ ହୋଇଥାଏ ଯେତେବେଳେ ସଶକ୍ତ ମହିଳା ହିଁ ଜୀବନର ସବୁ କ୍ଷେତ୍ରରେ ଯେପରିକି ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ, ଶିକ୍ଷା ଇତ୍ୟାଦି କ୍ଷେତ୍ରରେ, ପୂର୍ଣ୍ଣରୂପରେ ଏବଂ ପୁରୁଷଙ୍କ ସହ ସମାନ ରୂପରେ ଭାଗ ନେଇଥାଏ।

ସଙ୍ଗିନୀର ଏହି ପ୍ରକାଶିତ ଅଙ୍କଟି ସ୍ତ୍ରୀର ବନ୍ଦନୀୟା ରୂପ ମାଁ ଶାରଦା, ବିଦ୍ୟାଦେବୀ ମାଁ ସରସ୍ୱତୀଙ୍କଠାରୁ ଆରମ୍ଭ କରି ସମାଜର ବିବିଧ ରଙ୍ଗରେ ରଙ୍ଗାୟିତ ''ହୋଲି'' କୁ ପ୍ରକାଶିତ କରିବା ସହିତ ମହିଳା ସଶକ୍ତିକରଣର ହର୍ଷପୂର୍ଣ୍ଣ କିଛି ପଙ୍କ୍ତିକୁ ଆପଣମାନଙ୍କ ସମକ୍ଷରେ ରଖିବାର ପ୍ରୟାସ କରିଛି। ସ୍ୱାମୀ ବିବେକାନନ୍ଦ ଏବଂ ନେତାଜୀଙ୍କ ସଂକଳ୍ପ ସହ ମଧ୍ୟ ଆମକୁ ପରିଚିତ କରାଇଛି। ଯାହା ଆମକୁ ସ୍ମରଣ କରାଇ ଦେଉଛି କି ଭାରତ ମହିଳାଙ୍କୁ ସଶକ୍ତ କରିବାରେ ଏକ ଲମ୍ବା ରାସ୍ତା ଅତିକ୍ରମ କରିସାରିଛି। ତେବେ ଆଜି ମଧ୍ୟ ଆହୁରି ଅନେକ ପଥୁରିଆ ରାସ୍ତା ପାରି କରିବାର ବାକି ରହିଯାଇଛି। ଶେଷରେ ମୁଁ ସମସ୍ତ ପାଠକଙ୍କୁ ଏତିକି କହିବାକୁ ଚାହିଁବି, ''ସୁସ୍ଥ ସ୍ତ୍ରୀ'' ହିଁ ''ସୁସ୍ଥ ସମାଜ'' ର ଏକ ଅଭିନ୍ନ ଅଙ୍ଗ। ସମାଜରେ ''ନାରୀଶକ୍ତି'' କୁ ସୁଦୃଢ଼ କରି ହିଁ ଆମେ ଏକ ''ଶକ୍ତିଶାଳୀ ରାଷ୍ଟ୍ର'' ର ପରିକଳ୍ପନା କରିପାରିବା।

सरस्वती पूजा

<u>प्रार्थना</u>

"सरस्वती नमस्तुभ्यं,
वरदे कामरूपिणी,
विद्यारम्भं करिष्यामि
सिद्धिर्भवतु मे सदा ।"

बसंत पंचमी जिसे सरस्वती पूजा के नाम से भी जाना जाता है, को हिन्दू धर्म में एक महत्वपूर्ण त्यौहार माना जाता है। बसंत पंचमी को श्री पंचमी के नाम से भी जाना जाता है। इस दिन माँ सरस्वती की पूजा की जाती है। माँ सरस्वती जो ज्ञान की देवी हैं, इसी दिन इनका जन्म दिन भी मनाया जाता है। स्कूल कॉलेजों और कार्यालयों में इनकी प्रतिमा लगाकर बड़े ही श्रद्धा के साथ इनकी पूजा की जाती है। सरस्वती पूजा में बच्चों से लेकर बड़े बुजुर्गों तक माँ के सामने माथा झुकाकर कर माँ से प्रार्थना करते हुए अच्छी बुद्धि एवं ज्ञान की कामना करते हैं।

माता सरस्वती के आशीर्वाद से हमें अच्छे ज्ञान की प्राप्ति होती है और इससे हम सबका उत्तम विकास होता है। माँ सरस्वती से हमें हमेशा प्रार्थना करना चाहिए कि उनकी कृपा दृष्टि हमेशा हम पर बनी रहे। माँ सरस्वती जो विद्या की देवी हैं, हमें सर्वदा उन्हें सम्मान देना चाहिए ।

सरस्वती पूजा हर वर्ष माघ मास के शुक्ल पंचमी के दिन मनाया जाता है। यह जनवरी के अंत मे या फरवरी के शुरूआत मे, यानी वसंत ऋतु मे आता है। वसंत ऋतु अपने आप मे बेहद सुन्दर ऋतु होती है। यह ऋतुओं का राजा कहलाता है। वसंत ऋतुओं में चारों तरफ हरियाली ही हरियाली रहती है। इस ऋतु मे पुराने पत्तों का झड़ना, नए पत्ते का आना अपने आप मे बड़ा ही आनंदायक और निराला लगता है। सरस्वती पूजा बसंत ऋतु में मनाने के कारण पूरा त्यौहार खिला-खिला सा लगता है। खेतों में हरियाली छा जाती है, तरह तरह के फूलों का खिलना, आम के वृक्ष में बौर का लगना, बहती हवा मे उसकी महक, दूर-दूर से कोयल की मीठी गान सुनाई देने पर मन ख़ुशी से खिल उठता है।

हिन्दू ग्रन्थ में माँ सरस्वती के जन्म के पीछे एक बड़ी ही अद्भुत और रोचक कहानी है। सृष्टि के कर्ता ब्रह्मा जी ने जब संसार मे मनुष्य और प्राणी की सृष्टि की थी, तब उन्हे लगा कहीं कोई कमी रह गई सृष्टि में। तब उन्होंने ने अपने कमंडल से एक सुन्दर सी चार भुजाधारी, जिनके हाथ मे वीणा, पुस्तक, माला और कमंडल सुशोभित था, एक अति सुन्दर नारी की। जिन्हें आज हम वीणावादिनी, शारदा, भगवती इत्यादि नाम से भी जानते हैं। जब माँ सरस्वती ने ब्रह्मा के कहने पर वीणा के नाद से सारे प्रकृति को खुश कर दिया। जिनमे कलकल बहता पानी, हवा में सरसरहाट सुनाई देने लगी, तब ब्रह्मा जी ने माँ सरस्वती को "वीणा की देवी सरस्वती" माना।

माँ सरस्वती को हम हमेशा सफ़ेद रंग की साड़ी में देखते हैं। माता को हंस वाहिनी भी कहा जाता है, जो सफ़ेद रंग के हंस पर विराजमान हैं। सफ़ेद रंग पवित्रता और शांति का प्रतीक माना जाता है। चित्र में माँ सरस्वती को नदी के किनारे बैठे हुए हम देख सकते हैं, जो की हमारे जीवन का अस्तित्व है। शास्त्रों के अनुसार कमल का फूल ज्ञान और पवित्रता को दर्शाता है, जिस पर माँ सरस्वती हमेशा विराजमान रहतीं हैं।

माँ सरस्वती विद्या की देवी हैं, इसलिए विद्यार्थियों का इस पूजा में विशेष रूप से योगदान होता है। इस पूजा में सभी विद्यार्थी उपस्थित होते हैं। इस दिन माता सरस्वती का श्रृंगार किया जाता है। उनके चरणों में लाल गुलाल अर्पित की जाती है। पूजा स्थल का स्थान फूल, पत्तियों और दुर्वा से सजाया जाता है। पण्डित जी को पूजा के लिए बैठाया जाता है। पण्डित जी के मंत्रों से पूरे वातावरण में सकारात्मक ऊर्जा उत्पन्न होती है। माता सरस्वती का बहुत ही सुन्दर तरीके से श्रृंगार किया जाता है। खासतौर पर पीले फूलों का प्रयोग किया जाता है।

दिए जलाये जाते हैं और लाल गुलाल पूरी श्रद्धा के साथ अर्पित किया जाता है। माँ के चरणों में प्रसाद भी चढ़ाया जाता है, जिसमे नारियल, मिठाई, केला, बेर और तरह तरह के फल होते हैं। कई जगहों पर सरस्वती पूजा के बाद ही बेर को खाना पसंद करते हैं। माँ के सामने दीये भी प्रज्वलित किए जाते हैं। पूरा पूजा स्थल अगरबत्ती और फूलों की सुगंध से महक उठता है। विद्यार्थी अपने किताब, पेन, पेंसिल इत्यादि पूजा के पास रखते हैं। सभी विद्यार्थियों को अबीर का टीका लगाया जाता है। आज के दिन बच्चों की खुशी का ठिकाना नहीं होता क्योंकि उनको घर में पढ़ने से मना कर दिया जाता है। बसंत पंचमी के दिन विद्यारंभ करने की बहुत पुरानी प्रथा है। हिन्दू धर्म के अनुसार सरस्वती पूजा में बच्चों के हाथ से अक्षर ज्ञान कराना भी शुभ माना जाता है। पूजा के एक-दो दिन बाद ही माता सरस्वती की प्रतिमा का विसर्जन किया जाता है। इस विसर्जन में विद्यार्थी व श्रद्धालु विशेष रूप से भाग लेते हैं और माता का विसर्जन करते हैं।

वसंत पंचमी के दिन से ही ब्रज के क्षेत्र में चौराहों पर होलिका दहन के लिए लकड़ी एकत्रित करना प्रारम्भ कर देते हैं। इसके बाद गुलाल उड़ाया जाता है, जो की लगातार फागुन मास तक चलता है।

माँ सरस्वती का एक मूल मंत्र, जो अपने आप में बहुत ही प्रभावशाली माना जाता है, को मैं आप सब तक पहुँचाना चाहती हूँ।

मंत्र -

वीणा की देवी सरस्वती जिह्वा बैठो अनुकूल।
उसकी विद्या हर लो, जो मेरे प्रतिकूल ॥
मेरी वाणी तेरी वीणा, हर शब्द मे तेरा वास।
जिसके सर रखूँ मै हाथ, उसको कभी न हो निराशा ॥
हर मंत्र मे तेरी शक्ति तेरे ज्ञान से मिले है मुक्ति।
मेरे जीवा विराजो तुम, सदा शुभ फ़रमाओं।
विद्या ज्ञान के खोलो कपाट, मेरी जड़ता को मिटाओ ॥

इस पूरे आलेख से यह सबित होता है कि हमारे जीवन में सरस्वती पूजा का कितना अहम स्थान है। विद्या और ज्ञान के बिना हम कितने अधूरे हैं। अगर नियमित रूप से इनकी हम पूजा करतें हैं तो अपने भविष्य को उज्ज्वल बना सकते हैं। हर एक विद्यार्थी अपनी पढ़ाई शुरू करने से पहले सरस्वती माँ को नमन करे और पढ़ाई शुरू करे। इसे एक नियम बना लें और आत्मविश्वास के साथ आगे की ओर अग्रसर हो, तो माँ सरस्वती अजीवन उसकी रक्षा करेंगीं।

अनुराधा पटनायक
दामनजोड़ी

माँ शारदा

जय माँ सरस्वती विद्यादायिनी,
ज्ञान की देवी हँसवाहिनी।
विद्या का हमें दो वरदान,
करें सदा हम अच्छे काम।

अज्ञानता से हमें तार दे,
क्षमा, दया और सच्चा विचार दे।
जग से तम हर ले माँ,
दिव्य ज्ञान भर दे, सबका दु:ख टूटे माँ,
सबको सुख वर दे।

बस यही प्रार्थना जीवन भर,
चलूँ सतकर्म,
सदाचरम के पथ पर
ज्ञान के दीपक से मिटाऊँ
मन का अँधेरा,
सार्थक हो जाए जीवन,
चरण वंदन है मेरा॥

स्नेहा पाल
दामनजोड़ी

रंगोत्सव

होली का त्यौहार सबसे महत्वपूर्ण हिंदू त्यौहार है। यह हमारे लोक आस्था का प्रतीक है। होली का त्यौहार भावना एवं रंग बिरंगे रंगों का त्यौहार है, जो धर्म, संप्रदाय, जाति के बंधन की सीमा से बाहर जाकर लोगों के बीच भाईचारे का संदेश देता है। फागुन मास की शुरुआत होते ही फगुवा गाने की परंपरा रही है। फाग लोकगीत सुनकर पता चलता है कि होली आने वाली है। होली का त्यौहार फागुन मास की पूर्णिमा को मनाया जाता है। इसकी शुरुआत होलिका दहन से होती है।

इससे जुड़ी एक पौराणिक कथा है। जब हिरणकश्यप अपने पुत्र प्रहलाद, जो विष्णु के परम भक्त थे, उनकी भक्ति को रोक पाने में असफल रहने पर अपने पुत्र प्रहलाद को मारने का आदेश दिया। कश्यप अपनी बहन होलिका की मदद से प्रहलाद को मारने की योजना बनाई। होलिका को वरदान मिला था कि वह जलेगी नहीं, उसने भक्त प्रहलाद को गोद में लेकर अग्नि में बैठ गई। फिर चारों तरफ लकड़ियों के ढेर में आग लगा दी गई। लेकिन भक्त प्रहलाद को कुछ नहीं हुआ और होलिका जल कर भस्म हो गई। बुराई पर अच्छाई की जीत की याद में तभी से होली का त्यौहार मनाया जाता है।

यह फसल कटाई का भी त्यौहार है। साथ ही बसंत के आगमन पर सर्दियों की समाप्ति का प्रतीक है। भगवान श्रीकृष्ण से जुड़ी बहुत सी कथाएं इससे जुड़ी हुई हैं। जिसमें श्री कृष्ण ने गोपियों के साथ रासलीला और रंग खेलने के उत्सव के रूप में मनाया। इस पर्व को होलिकोत्सव भी कहते हैं। होलिका शब्द से ही होली बना है। होलिका शब्द की उत्पत्ति संस्कृत के होलक शब्द से हुई है। जिसका शाब्दिक अर्थ है- 'भुना हुआ अन्न'।

जब किसान अपनी फसल काटता है तो पहला भोग भगवान को लगाया जाता है इसलिए नए अन्न को अग्नि को समर्पित कर भुना जाता है।

होली ही एक ऐसा त्यौहार है, जिसमें हम सारे शिष्टाचार के बंधन तोड़ कर बड़े-छोटे, राजा-रंक, बच्चे-जवान सभी एक दूसरे का उपहास करते हैं। मिलकर नाचते गाते इसमें सारा समाज एक सूत्र में बंध जाता है। एक दूसरे के गले मिलना, एक दूसरे को अबीर-गुलाल लगाना, अपने दिल की खुशियों को बिखेर देना, सुबह से ही घर की स्त्रियाँ पकवान बनाने में लग जाती हैं। तरह-तरह के पकवान की खुशबू से पूरा मोहल्ला महकने लगता है। होली पूरे भारत में हर क्षेत्र में अलग-अलग परम्पराओं एवं रीति रिवाज़ों के साथ मनाई जाती है। होली के दिन की खुशी की वजह से सभी में एक नए जीवन को जीने की प्रेरणा आ जाती है। इस दिन सभी में एक नई उमंग आ जाती है। होली के त्यौहार का सभी लोगों के लिए एक समान महत्व होता है। होली को रंगों का त्यौहार भी कहा जाता है। जिसमें लोग बहुत से साधनों के द्वारा एक दूसरे को रंगों से रंग देते हैं। होली के त्यौहार को अपनेपन की होली इसलिए कहा जाता है, क्योंकि आज के दिन को रंगों, खुशियों मिठाईयों और पकवानों का दिन कहा जाता है। होली के दिन सभी जगहों पर रंग ही रंग दिखाई पड़ते हैं। मानों पूरा शहर रंगीन हो गया हो।

होली भारत ही नहीं अपितु पूरे विश्व में बड़े धूमधाम से मनाई जाती है। हम सब एक साथ भोजन करते हैं। होली में गुजिया की मिठाई विशेष रूप से खाई जाती है। होली पर कई लोग भांग और ठण्डई भी पीते हैं। लेकिन होली में लोगों को अपने परिवेश के प्रति जागरूक रहना चाहिए, किसी को नुकसान नहीं पहुँचाना चाहिए।

रंगो का त्यौहार है, होली। खुशियों की पैगाम है, होली।
लाल पीले हरे रंगो की, रंग-बिरंगी होती है होली।
एक दूजे को रंग में रंगकर,दूरियाँ सारी मिटाती है होली,
होली की मस्ती में, डूबे बच्चे, बूढ़े और नर-नारी।
क्योंकि 'बुरा ना मानो होली है', कहकर करते सब मनमानी ॥'

अंजनि गुप्ता
अनुगुळ

होली

होली हिंदू धर्म के प्रमुख त्यौहारों में से एक है, जिसे रंगों का त्यौहार भी कहा जाता है। होली प्रत्येक वर्ष 'फागुन' मास में विभिन्न रंगों की छटा के साथ मनाई जाती है।

होली का त्योहार पूरे भारतवर्ष में बहुत ही धूमधाम एवं हर्षोल्लास से मनाया जाता है। इस दिन घरों में भांति भांति के पकवान बनाए जाते हैं। यह त्यौहार लोग आपस में गले लगा कर एक दूसरे को रंग लगाकर मनाते हैं। इस दौरान धार्मिक और फागुन गीत गाए जाते हैं।

होली से 1 दिन पूर्व होलिका दहन किया जाता है, जिसके पीछे एक प्राचीन इतिहास है। प्राचीन समय में हिरणकश्यप नाम का एक असुर था, जो भगवान विष्णु का विरोधी था। उसकी एक बहन थी, जिसका नाम होलिका था। हिरणकश्यप के पुत्र प्रहलाद भगवान विष्णु के बहुत बड़े भक्त थे। इसी बात से हिरणकश्यप अत्यंत क्रोधित था और एक दिन इसने अपनी बहन होलिका से प्रहलाद को गोद में बैठा कर आग में बैठने का आदेश दिया क्योंकि होलिका को आग में ना जलने का वरदान प्राप्त था।उसके बाद होलिका प्रहलाद को लेकर चिता में बैठ जाती है, लेकिन प्रहलाद तो आग्नि में सुरक्षित बचे रह जाते हैं जबकि होलिका उसी चिता में जलकर भस्म हो जाती है। इस प्रकार इस दिन भगवान विष्णु ने अपने परम भक्त प्रहलाद को उसकी भक्ति का फल देते हुए होलिका से बचाया था।

देखा जाए तो होली के त्यौहार को मनाने का मुख्य उद्देश्य पुरानी दुश्मनी को भुलाकर एक साथ रहना है, इसलिए होली के त्यौहार को दोस्ती और प्यार का त्यौहार भी कहते हैं। चूँकि होली रंगोत्सव है, जिसमें लोग एक दूसरे को रंग, अबीर, गुलाल लगाते हैं, इसी वजह से इस त्यौहार को सभी धर्मों के लोग पूरे उत्साह और खुशी से मनाते हैं, जोकि सर्वधर्म समभाव व भाईचारे का प्रतीक है।

भूल जाओ सारे गम, खेलो होली सब के संग।
जिसने होलिका में जला दी सारी बुराई,
उसी ने इस वर्ष सबसे बढ़िया होली मनाई।
प्रेम बरसे ऐसी हो बोली, रंग बरसे ऐसी हो होली।

कल्पना दुबे
दामनजोड़ी

रंगीन यादें

लो चली मैं... उन रंगीन गलियों में,
झुमती हुई टोलियों में,
मदहोश महफिलों में,
उन यादों के काफ़िलों में,
जाने कैसे बीत गए,
वह मेरे रंग भरे दिन !

लो चली मैं... उन बीते हुए पलों में,
जो थे, रंग-बिरंगी गुलालों में,
माँ के मीठे पकवानों में,
चेहरे पे खिली मुस्कानों में,
जाने क्यों बीत गए,
वह मेरे जश्न भरे दिन !
लो चली मैं... उन यादों की दुनिया में,
जहाँ घरों में रौनक सजते,
यारों के संग झूमते,
टोली बनाकर घर-घर घूमते,
जाने कितने अनगिनत,
शरारतों के तिगड़म सोचते।
कुछ ऐसे ही बीत गए,
वह मेरे मस्ती भरे दिन !
तो चलते-चलते...
मैं कहीं... खो सी गई,
राह में कहीं... थम सी गई।
छोड़ आई वह प्यारा बचपन,
खिल-खिलाता वह मेरा आँगन,
सब यहीं पीछे छूट गए,
अब तो साथ रह गए,

बस रंगीन यादों के साये में,
मेरे वह होली के दिन,
वह मेरे होली के दिन...

स्वाति सुनीता महापात्र
अनुगुळ

माँ

माँ शब्द ॐ से शुरू हो,
माँ, अम्मा, अम्मी, आई,
जिस नाम से पुकारो दौड़े चली आई।
माँ ही है, जो हर एक खुशी मे साथ रहे,
माँ ही है, जो हर एक दु:ख साथ सहे।

माँ है तो, बिन खाए सोने न दे,
माँ है तो, बिन माँगे सब कुछ दे दे।
मैं रोऊ, तो माँ मुझे हँसाए,
मैं रूठूँ, तो माँ मुझे मनाए।
मेरे बिन बोले मेरी बात समझे,
मेरे बिन बोले मेरे दर्द को
महसूस करें।

जिंदगी की कठिन राह पर,
मेरा मार्गदर्शक बने।
उलझनों को झट से सुलझाए,
अंधेरे में मेरी रोशनी बने।
दुनिया की भीड़ में, मुझे तन्हा न छोड़े।
माँ मेरे साथ चले तो लगे,
मेरी परछाई कभी न छूटे।
जब वह मेरे साथ ना रहे तो,
उसकी कमी महसूस करूँ मैं।
और उसका साथ पाकर मैं,
हर गम से दूर रहूँ।

जो लाख बुराईयाँ करूँ फिर भी,
माँ मुझसे कभी नाराज़ नही।
माँ तो मेरा अभिन्न अंग है,
ज्ञात मुझे, लाख जन्म ले लूँ,
पर ऋण न चुका पाऊ मैं।

वी अनुराधा
दामनजोड़ी

हमारा नालको

1981 में ओडिशा की रत्नगर्भा धरा पर,
हमारे नालको को मिला आकार,
जो पिछले 43 वर्षों से कर रहा है,
न जाने कितने सपनों को साकार।
बॉक्साइट, एल्यूमिनियम को तराश
कर इसने,
भारत को मजबूत अर्थव्यवस्था का
वरदान दिया,
असंख्य लोगों को एक
सशक्त ज़मीन तो,
अनेकों के सपनों का आसमान दिया।
इसने विश्व पटल पर ओडिशा को,
एक नई पहचान दी,
ओडिशा की जगन्नाथ संस्कृति को,
इसने अद्भुत सम्मान दिया ।
इसने अपने कर्मचारियों को,
उन्नत जीवन शैली की सौगात दी,
अस्पताल, विद्यालय, क्लब, पार्क,
स्टेडियम

जैसी कई सुविधाओं की बरसात की।
इसका टाउनशिप अपने आप में
एक खूबसूरत शहर है,
जिसमें देश के कोने-कोने से आए
लोगों के सपनों का प्यारा घर है।
अपने कर्मठ लोगों के मेहनत से इसने
हमेशा सफलता का स्वाद चखा,
तभी तो कोविड काल में भी,
इसकी तरक्की का रथ न रुका।
महिला सशक्तिकरण को इसने
नया आयाम दिया,
महिला समिति, संगिनी जैसे मंच दे
उनको नया मुकाम दिया।
सिर्फ उद्योग ही नहीं बल्कि
सामाजिक कार्यों में भी आगे है
नालको,
अपने सेवा भाव से इसने आसान
बनाया
हर मुश्किल हर हाल को।
प्रकृति संरक्षण में भी इसका,
अतुलनीय योगदान है,
तभी तो भारत को भी अपने ,
इस नवरत्न पर अभिमान है।
हिंद की तरक्की से कभी भी
इसका छूटे साथ ना,
बस उस परमपिता परमेश्वर से
है हमारी यही प्रार्थना।

स्वाती तिवारी
अनुगुळ

ପୁଣି ଥରେ ରଙ୍ଗ

ପତ୍ନୀ ରାଧିକାଙ୍କ ଯିବାର ସାତ ବର୍ଷ ହେଇଗଲାଣି। ଏମିତି କୋଉ ମୁହୂର୍ତ୍ତ ନାହିଁ, ଯେଉଁ ମୁହୂର୍ତ୍ତରେ କି ତାଙ୍କ କଥା ମନେ ପଡୁନି ରାଜୀବଙ୍କର। ସତେକି ପୁଅ ବୁବୁନାର ବାହାଘର ପାଇଁ ଅନେଇ ବସିଥିଲେ ସେ। ବାହାଘରର ଠିକ୍ ବର୍ଷେ ମାସେ ପରେ ପୁରୁଣା କ୍ୟାନ୍ସର ରୋଗ ସହ ଯୁଝି ଚାଲିଗଲେ ରାଧିକା। ଯେଉଁ ଦିନ ତାଙ୍କର ବ୍ରେଷ୍ଟ କ୍ୟାନ୍ସର ହେଇଛି ବାଲି ଡିଟେକ୍ଟ ହେଲା ସେଇଦିନ ହିଁ କାନ୍ଦି କାନ୍ଦି ସେ ଗାଟିଏ କଥା ମାଗୁଣି କରିଥିଲେ ତାଙ୍କୁ। ବୁବୁନାକୁ ବାହା କରେଇଦେବା। ଗାଟିଏ ସନ୍ତାନ ମୋର। ତା ମଥାରେ ଦୋଳମୁକୁଟ ଦେଖିପାରିଲେ ମୁଁ ଯାଇଁ ଖୁସିରେ ମରିପାରିବି। ଯୁଦ୍ଧକାଳୀନ ଭିତ୍ତିରେ ବୋହୂ ଖୋଜା ହେଲା। ଭାଗ୍ୟକୁ ସର୍ବଗୁଣ ସମ୍ପନ୍ନା ରିତୁ ଘରକୁ ବୋହୂ ହେଇ ଆସିଲା। ରାଧିକାଙ୍କ ଖୁସି ଆକାଶ ଛୁଉଁଥିଲା। ବାହାଘର ପରେ ସେ ଟିକେ ସୁସ୍ଥ ବି ହେଇଥିଲେ। ଶାଶୂ ବୋହୂଙ୍କ ଭିତରେ ଅଳ୍ପ ଦିନ ମଧ୍ୟରେ ଗଢି ଉଠିଥିବା ମା ଝିଅ ପରି ସମ୍ପର୍କକୁ ଦେଖି ରାଜୀବ କିଛିଟା ରିଲାକ୍ସ ବି ଅନୁଭବ କରୁଥିଲେ। କିନ୍ତୁ ପ୍ରତି ମୁହୂର୍ତ୍ତରେ ଏକ ଅଜଣା ଭୟ ତାଙ୍କୁ ଗ୍ରାସ କରୁଥିଲା। ଦୀପ ଲିଭିବା ପୂର୍ବରୁ ଜୋରରେ ଜଳିଲା ପରି ରାଧିକାଙ୍କ ଏ ଖୁସି, ଏ ସାମାନ୍ୟ ସୁସ୍ଥତା ଝଡ଼ର ପୂର୍ବର ସଂକେତ ନୁହେଁ ତ ଆଉ ! ହୁଏତ ତାଙ୍କ ଅନୁମାନ ଠିକ୍ ଥିଲା।

ସେଦିନ ବୁଧବାର ହେଇଥାଏ। ଆମିଷ ଦିନ । ବୋହୂ ରାନ୍ଧିଥିବା ଅଦା ହେଙ୍ଗୁ ପକା ଖେଚେଡ଼ି ସାଙ୍ଗକୁ ନଡିଆ ରସ ଦିଆ ଚିଙ୍ଗୁଡ଼ି ତରକାରୀ ଖୁବ ଖୁସିରେ ଖାଇ ନିଦରେ ଶୋଇଥିଲେ ରାଧିକା। ହେଲେ ସନ୍ଧ୍ୟା ବେଳକୁ ପ୍ରବଳ ଜର। ବିଳମ୍ବ ନ କରି ସଂଗେ ସଂଗେ ନର୍ସିଂ ହୋମରେ ଆଡ଼ମିଟ୍ କରାହୋଇଥିଲା ତାଙ୍କୁ। ଖୁବ ଶୀଘ୍ର ଡେଟୋରିଏଟ୍ କରିଗଲେ। ମାତ୍ର ପନ୍ଦର ଦିନ ଭିତରେ ସବୁ ଶେଷ। ତାଙ୍କ ଯିବାର ଏହି ସାତ ବର୍ଷ ସାତ ଯୁଗ ପରି ଲାଗେ ରାଜୀବଙ୍କୁ। ମନେ ପଡ଼ିଯାଏ ଅତୀତ କଥା। ସେ ହେଇଯାଆନ୍ତି ରେଭେନ୍ସା କଲେଜ ସ୍ନାତକୋତ୍ତର ପଦାର୍ଥ ବିଜ୍ଞାନର ଶାନ୍ତ ସରଳ ପଠନପ୍ରିୟ ଛାତ୍ରଟିଏ । ଯେହେତୁ ଗାଁ ରୁ ଆସିଥାନ୍ତି, ଜନ୍ମ ମାଟି ସହ ନିବିଡ଼ତା ଅଧିକ ହେବା ସ୍ୱାଭାବିକ। ଏଣୁ ପ୍ରତି ପୂଜା ପର୍ବାଣୀରେ ତାଙ୍କର ଗାଁ କୁ ଯିବାଟା ଥୟ। ବୋଉ, ନନା ଓ ଅନ୍ୟମାନଙ୍କ ଛଡ଼ା ଆଉ ଜଣେ ଯିଏ ତାଙ୍କ ଯିବାରାସ୍ତାକୁ ବ୍ୟାକୁଳ ହେଇ ଅନେଇ ବସିଥାଏ ତ ସେ ହେଉଛି ଜେଜେମା। ବସ୍ ଯାଇଁ ସନ୍ଧ୍ୟା ଛଅଟାରେ ଗାଁ ମୁଣ୍ଡରେ ଲାଗିଲା ବେଳକୁ ଜେଜେମା ବଂକୁଲି ବାଡ଼ିଟିଏ ଧରି ଯାଇଁ ହାଜର ହେଇଯାଇଥାଏ। ସେଇଠୁ ତାଙ୍କୁ କାନିରେ ପୋଛି ଆଉଁସି ଆଉଁସି ଘରଯାଏଁ କେତେକଥା ଗପି ଗପି ଆସେ। ସତେକି ସେ ବହୁବର୍ଷ ପରେ ଘରକୁ ଫେରୁଛନ୍ତି। ହେଲେ ଆଜି ସେସବୁ ଅତୀତ। ଜେଜେମା' ଆଉ ନାହିଁ। ଜେଜେମା' ମୃତ୍ୟୁର ବର୍ଷେ ଯାଏଁ ଘରେ ଠାକୁର ଭୋଗ ଖାଇବେ ନାହିଁ କି ହୋଲି ଖେଳ ହେବନାହିଁ। ଏଣୁ ସେ ବର୍ଷ ସେ ଛୁଟିରେ ଘରକୁ ଯାଇନଥିଲେ। ମନ ବି ଭଲ ଲାଗୁ ନ ଥାଏ। ଏଣୁ ଯୋଶେଫ ଘରକୁ ଯାଇ ତାଙ୍କ ଘରେ ଥିବା ଡୋବରମ୍ୟାନ୍ କୁକୁର, ଟାଇଗର ସଙ୍ଗେ ଖେଳି ଅନ୍ୟମନସ୍କ ହେଇ ଫେରୁଥିଲେ। ଲେଡିଜ୍ ହଷ୍ଟେଲ ଆଗ ଦେଇ ତାଙ୍କ ବଏଜ ହଷ୍ଟେଲକୁ ଯିବାକୁ ପଡ଼େ। ହଠାତ୍ ହଷ୍ଟେଲ ଭିତରୁ କିଛି ଝିଅ ରୋଳ କରି ବାହାରି ଆସୁ ଆସୁ ତାଙ୍କ ଉପରେ ମେଞ୍ଚାଏ ରଙ୍ଗ କିଏ ପକେଇଦେଲା। ବିରକ୍ତି ରେ ଚାହିଁ ଦେଖନ୍ତି ତ ରଙ୍ଗମଖା ଝିଅଗୁଡିକ ତାଙ୍କ ଆଡ଼ିକୁ ଚାହିଁ ଫେଁ ଫେଁ ହସୁଛନ୍ତି। ହେଲେ ସେମାନଙ୍କ ମଧ୍ୟରୁ ଜଣେ ଝିଅ ଭୟାତୁର ଆଖିରେ ତାକୁ ଚାହିଁଛି। ହାତରେ ରଙ୍ଗ ପ୍ୟାକେଟ। ସାରା ମୁହଁ ରଙ୍ଗରେ ଭର୍ତ୍ତି। ସୁନ୍ଦରୀ କି ବାନ୍ଦେରୀ ଜଣା ପଡୁନଥାଏ। କାତର ଆଖି ଦୁଇଟିରୁ ସେ ଜାଣିଗଲେ ଯେ ଏଇ ଝିଅଟି ସାଙ୍ଗ ମାନଙ୍କ ଉପରେ ରଙ୍ଗ ଫିଙ୍ଗୁ ଫିଙ୍ଗୁ ଭୁଲବଶତଃ ଆସି ତାଙ୍କ ଉପରେ ପଡିଛି। କଣ ଆଉ କହିବେ। କିଛି ନ କହି ସେ ଚୁପ ଚାପ ଚାଲି ଆସିଲେ ହଷ୍ଟେଲକୁ। ଛୁଟି ପରେ କଲେଜ ଖୋଲିଲା। ଦିନେ ଆର୍ଟସ ବ୍ଲକରୁ ସାଇନ୍ସ ବ୍ଲକ ଆଡ଼ିକୁ ଯାଉ ଯାଉ ହଠାତ ସରି ବୋଲି କାହାର କୋମଳ କଣ୍ଠ ଟିଏ ଶୁଭିଲା। ବୁଲି ପଡି ଦେଖନ୍ତି ତ ମଧ୍ୟମ ଉଚ୍ଚତାର ସୁନ୍ଦର ଝିଅଟିଏ। ଦୁଇଟି ଲମ୍ବ ବେଣୀ ଆଗକୁ ଝୁଲିଥାଏ। କିଛି ବୁଝି ନ ପାରି ପଚାରିଲେ- କଣ ପାଇଁ ସରି। ମୁଁ ତ ତମକୁ ଚିହ୍ନିନି କି ଦେଖିନି କେବେ।

ଏଥରକ ତଳକୁ ମୁହଁ ପୋତି ଝିଅଟି କହିଲା---

ମୁଁ ସେଦିନ ଜାଣିଶୁଣି ଆପଣଙ୍କ ଉପରେ ରଙ୍ଗ ପକେଇ ନ ଥିଲି। ସାଙ୍ଗ ମାନଙ୍କ ଉପରକୁ ରଙ୍ଗ ଫିଙ୍ଗୁ ଫିଙ୍ଗୁ ଆପଣଙ୍କ ଉପରେ ପଡିଗଲା। ସେତେବେଳେ ଭୟରେ ସରି ବୋଲି ବି କହି ପାରି ନଥିଲି। ଆଜି ଆପଣଙ୍କୁ ଦେଖି କ୍ଷମା ମାଗୁଛି।

'ଦାଟ୍ସ ୱାଜ୍ ଓକେ' କହି ସେ ଚାଲି ଯାଇଥିଲେ କ୍ଲାସ କରିବାକୁ। ହେଲେ କାହିଁକି କେଜାଣି ମନ ରହିଯାଇଥିଲା ଝିଅଟି ପାଖରେ। ଝିଅଟିର ନୀରିହତା ତାଙ୍କୁ ଭଲ ଲାଗିଥିଲା। ପରବର୍ତ୍ତୀ କିଛିଦିନ ସେ ମନେ ମନେ ଖୁବ ଖୋଜୁଥିଲେ ଝିଅଟିକୁ। ଝିଅଟିର ନାଁ କି କୋଉ ବର୍ଷର ଛାତ୍ରୀ ସେକଥା ତ ସେ ସେଦିନ ପଚାରି ବୁଝି ନ ଥିଲେ। ହଠାତ ଦିନେ ଷ୍ଟଡିରୁମରୁ ଝିଅଟି ଏକୁଟିଆ ବାହାରୁଥିବାର ଦେଖି ପାରି ତା ପାଖକୁ ଯାଇ ନିଜ ଆଡୁ କଥାବାର୍ତ୍ତା ଆରମ୍ଭ କଲେ। ଝିଅଟି ବି ଲାଜ ଲାଜ ହୋଇ ଗପିଲା ତାଙ୍କ ସଂଗେ। ଗପସପରୁ ଜାଣି ପାରିଲେ ଝିଅଟିର ନାଁ ରାଧିକା ଓ ସେ ଗଣିତ ଅନର୍ସ ନେଇ ପଢୁଛି। ପରିଚୟ

ଖୁବ ଶୀଘ୍ର ପ୍ରେମରେ ପରିଣତ ହେଇ ଯାଇଥିଲା। ସମୟ କ୍ରମେ ଅଧିକ ପାଠ ପାଇଁ ଦିହେଁ ଦୁହିଁଙ୍କ ଠାରୁ ଅଲଗା ହେଇଯାଇଥିଲେ ବି ସମ୍ପର୍କ ନିବିଡ଼ ଥିଲା। ରାଜୀବ ଜବ୍ ପାଇଲା ପରେ ରାଧିକାଙ୍କୁ ବିବାହ ପ୍ରସ୍ତାବ ଦେଇଥିଲେ। ରାଧିକା ବି ସେତେବେଳକୁ ଏକ ବ୍ୟାଙ୍କ୍‌ରେ ଚାକିରି ପାଇଥିଲେ। ଦୁଇ ପରିବାରର ସହମତିରେ ବାହାଘର ହେଇଥିଲା।

ଜୀବନଟା ଆଗେଇ ଯାଉଥିଲା କୁଳୁକୁଳୁ ଝରଣା ପରି। ଅଜବ ଝିଅ ଏ ରାଧିକା। ଝିଅମାନେ ଚାକିରି କରିବାକୁ ଜିଦ୍ ଧରି ବସୁଥିବା ବେଳେ ରାଧିକା ବାହାଘର ପରେ ନିଜ ଜବ୍ ଛାଡ଼ିବା ପାଇଁ ରାଜୀବଙ୍କର ଅନୁମତି ଲୋଡିଲେ। କାରଣ କଣ ବୋଲି ପଚାରିବାରୁ ହସିଦେଇ ରାଧିକା କହିଥିଲେ---

ମୁଁ ମୋର ପୂରା ସମୟ ତମକୁ ଦେବାକୁ ଚାହେଁ। ଅଫିସ୍ ଗଲେ ତୁମ ପାଇଁ ମୋ ସମୟ କମିଯିବ। ସକାଳୁ ରାତି ଯାଏଁ ମୋର ସବୁ କାମ ତୁମ ପାଇଁ ଉଦ୍ଦିଷ୍ଟ ହେଉ ବୋଲି ମୋର ଇଛା।

'ମା ବାୟାଣୀ' କହି ଆଦରରେ ରାଧିକାଙ୍କୁ ଛାତିରେ ଜଡେଇ ଧରିଥିଲେ ରାଜୀବ। ତା ପର ଦିନ ହିଁ ଚାକିରିରୁ ଇସ୍ତଫା ଦେଇ ଦେଇଥିଲେ ରାଧିକା। ରାଜୀବଙ୍କର ମନ ପସନ୍ଦର ଖାଇବା ବନେଇବା ଠାରୁ ଆରମ୍ଭ କରି ରାଜୀବଙ୍କ ରୁଚିରେ ନିଜକୁ ସଜଉଥିଲେ ସେ। ରାଧିକାଙ୍କ ପାଇଁ ସାରା ସଂସାର ଯେମିତି ରାଜୀବମୟ ହୋଇ ଉଠିଥିଲା। ଦାମ୍ପତ୍ୟ ଜୀବନ କଟି ଯାଉଥିଲା ହସ ଖୁସିରେ। ହୋଲି ଦିନ ସେମାନଙ୍କ ପ୍ରଥମ ଦେଖା ହେଇଥିବାରୁ ପ୍ରତିବର୍ଷ ସେହିଦିନକୁ ତାଙ୍କର ଭାଲେଣ୍ଟାଇନ୍ସ ଡେ ବୋଲି ଭାବି ଦିନରେ ରଙ୍ଗ ଖେଳିବା ସହ ରାତିରେ ହୋଟେଲ ଯାଇ କ୍ୟାଣ୍ଡେଲ ଲାଇଟ ଡିନର କରୁଥିଲେ। ପ୍ରତିଥର ଗୋଲାପ ଦେଇ ନୂଆ ପ୍ରେମୀଯୁଗଳ ପରି ପରସ୍ପରକୁ ପ୍ରେମ ନିବେଦନ କରୁଥିଲେ। ସମୟ ଗଡୁଥିଲା। ଚାରି ବର୍ଷ ପରେ କୋଳକୁ ପୁଅ ବୁବୁନା ଆସିଥିଲା ସେମାନଙ୍କ ଖୁସିକୁ ଦ୍ୱିଗୁଣିତ କରି। ସବୁ ତ ଠିକ୍ ଚାଲିଥିଲା। ହେଲେ ଅଚାନକ କେଇ ବର୍ଷ ପୂର୍ବରୁ ରାଧିକାଙ୍କ ଅସୁସ୍ଥତା ଯେମିତି ସବୁ କିଛି ଭାଙ୍ଗି ଚୂରମାର କରିଦେଇଥିଲା। ସେଇ ଅସ୍ଥିର ଦିନମାନଙ୍କରେ ରାଧିକାଙ୍କ ଇଛା ଅନୁସାରେ ବୁବୁନାର ବାହାଘର ମଧ୍ୟ ହେଇ ଗଲା। ପୁଅ ବୋହୂଙ୍କ ସାଙ୍ଗରେ, ପୂର୍ବବର୍ଷ ମାନଙ୍କ ପରି ସେମାନେ ଖୁସିରେ ହୋଲି ମନେଇଥିଲେ। ହେଲେ ସବୁ କିଛି ଶେଷ ହେଇଗଲା ରାଧିକାଙ୍କ ମୃତ୍ୟୁ ପରେ। ସେହି ଦିନଠୁ ଆଉ ରଙ୍ଗ ଖେଳନ୍ତିନି ରାଜୀବ। ହୋଲି ଆସିଲେ ନୀରବ ହେଇଯାଆନ୍ତି। ଘଣ୍ଟା ଘଣ୍ଟା ଧରି ଉପରକୁ ଚାହିଁ କାହାକୁ ଖୋଜୁଥାଆନ୍ତି ଯେମିତି। ପୁଅ ବୋହୂ ବି ଦିବଂଗତ ଶାଶୂଙ୍କ ପାଇଁ ରାଜୀବଙ୍କର ଭାବନାକୁ ସମ୍ମାନ ଜଣେଇ ହୋଲି ଖେଳନ୍ତି ନାହିଁ। ସାଧାରଣ ଦିନ ମାନଙ୍କ ପରି ହୋଲି ଚାଲିଯାଏ ବିନା ରଙ୍ଗ ବିନା ଖୁସିରେ।।

****

ସବୁ ବର୍ଷ ପରି ହୋଲି ଆସିଛି ସବୁରି ଘରେ ଆନନ୍ଦ ନେଇ। ଆପାର୍ଟମେଣ୍ଟର ବାଲକୋନୀରେ ଠିଆ ହୋଇ ରାଜୀବ ଦେଖୁଥାନ୍ତି ରଙ୍ଗଖେଳ। ଆଖିରେ ଲୁହ ଜକଉ ଥାଏ। କଣ୍ଠରେ କୋହ ଜମାଟ ବାନ୍ଧୁଥାଏ। ଛିଡା ହେଇ ଗୋଡ଼ କାଟିବାରୁ ପାଖରେ ପଡିଥିବା ରକିଙ୍ଗ୍ ଚେଆରଟିରେ ବସି ପଡିଲେ ସେ। ବନ୍ଦ ଆଖିରେ ରାଧିକାଙ୍କୁ ମନେପକାଉଥିଲେ। ସବୁ ବର୍ଷ ସେ ପୁଅବୋହୂଙ୍କୁ ରଙ୍ଗ ଖେଳିବାକୁ କୁହନ୍ତି। ତାଙ୍କ ପାଇଁ ପିଲାମାନେ ବା କାହିଁକି ଏଇ ଖୁସିର ଦିନଟିକୁ ନୀରବରେ ପାଳିବେ। ହେଲେ ପିଲାମାନେ ସଂଭ୍ରମତାର ସହ ତାଙ୍କ କଥା ଆଡେଇ ଯାଆନ୍ତି ।

କାହା କୋମଳ ହାତର ସ୍ପର୍ଶରେ ଆଖି ଖୋଲିଗଲା ତାଙ୍କର। ଏ କଣ ! ତିନି ବର୍ଷର ନାତୁଣୀ ନବ୍ୟା ତା ଟିକି ହାତରେ ଫଗୁ ଟିକେ ନେଇ ତାଙ୍କ ଗାଲରେ ବୋଳି ଦେଉଛି। ବାମ ହାତରେ ଫଗୁ ଭରା ପଲିଥିନ୍‌ଟିଏ। ସେ କିଛି କହିବା ପୂର୍ବରୁ ବୋହୂ ଦଉଡି ଆସି 'ନା ବେବି ନା' କହି ଝିଅକୁ କାଖେଇନେଲା। ପୁଅ ତା ହାତରୁ ପଲିଥିନ୍‌ଟିକୁ ଝିଙ୍କି ନେଇ କହିଲା- ବ୍ୟାଡ ମ୍ୟାନର ଡାର୍ଲିଂ। ଜେଜେଙ୍କୁ ନ ପଚାରି କାହିଁକି ରଙ୍ଗ ଲଗେଇଦେଲ।

ହେଲେ ନବ୍ୟା ଫଗୁ ଆଣିଲା କେଉଁଠୁ? ସାମ୍ନା ଘରେ ନୂଆ ହୋଇ ଆସିଥିବା ଓଡ଼ିଆ ପରିବାରର ଝିଅଟି ନବ୍ୟାକୁ ସକାଳୁ ନେଇଯାଇଥିଲା ତାଙ୍କ ଘରକୁ। ସେଇଠି ସମସ୍ତଙ୍କୁ ରଙ୍ଗ ଲଗେଇବାର ଦେଖି ସେ ତା ପ୍ରିୟ ଜେଜେଙ୍କୁ ରଙ୍ଗ ଲଗେଇବ ବୋଲି କହି ଫଗୁ ପ୍ୟାକେଟଟିଏ ନେଇ ଆସିଥିଲା। ନୂଆ ପରିବାରଟି ବା କାହୁଁ ଜାଣିବେ ତାଙ୍କ ପରିବାରର ରଙ୍ଗ ନ ଲଗେଇବା ପଛର ଦୁଃଖଦ କାହାଣୀଟିକୁ।

ବାପା ମାଆଙ୍କର ଆକଟ ଶୁଣି ସତେ କି କାନ୍ଦି ପକେଇବ ନବ୍ୟା, ତାଙ୍କ ଗେହ୍ଲି ନାତୁଣୀ। ଥମ ଥମ ମୁହଁ। ଅପରାଧୀ ଅପରାଧୀ ଆଖି। ସେଇ ଆଖି ହଲକ ମନେ ପକେଇଦେଲା କଲେଜ ବେଳର ହୋଲିଦିନଟିକୁ ଯେଉଁ ଦିନ ରାଧିକା ଭୁଲବଶତଃ ତାଙ୍କ ଉପରେ ରଙ୍ଗ ପକେଇ ଦେଇଥିଲେ। ରାଧିକାଙ୍କର ସେଇ ଦୋଷୀ ଦୋଷୀ ଭାବର ଚାହାଣୀକୁ ଆଜି ନାତୁଣୀ ଆଖିରେ ଦେଖି ପାରୁଥିଲେ ରାଜୀବ। ତାଙ୍କୁ ଲାଗୁଥିଲା ସତେକି ରାଧିକା କହୁଛନ୍ତି ଆଉ କେତେଦିନ ପିଲାମାନଙ୍କର ହୋଲିକୁ ରଂଗହୀନ କରି ରଖିବ ରାଜୀବ। ତୁମେମାନେ ସେଠି ରଙ୍ଗ ନ ଖେଳିଲେ ମୋ ମନ ବି ଏଇଠି ଦୁଃଖରେ ବେରଂଗ ହେଇ ଯାଉଛି। ତୁମେ କଣ ଚାହଁ ମୋ ହୋଲି ରଂଗହୀନ ହେଇଯାଉ ବୋଲି। ତୁମେ ରଙ୍ଗ ଖେଳ ରାଜୀବ। ଫଳରେ ମୋ ପିଲାମାନେ ବି ଖୁସିରେ ରଙ୍ଗ ଖେଳି ପାରିବେ। ରଙ୍ଗ ପରା ଅନ୍ତହୀନ ପ୍ରେମର ପରିଚାୟକ।

ପଲିଥିନରୁ କିଛି ଫଗୁନେଇ ରାଜୀବ ପୁଅ ବୋହୂ ଓ ନାତୁଣୀ କପାଳରେ ଆଙ୍କିଦେଲେ ଫଗୁର ତିଳକ। ତା ପରେ କିଛି ଫଗୁ ନିଜ ଦେହରେ ନିଜେ ବୋଳି ଦେଇ କହିଲେ --ତୁମମାନଙ୍କ ମାମା ଚାହୁଁଛି ତୁମେମାନେ ରଙ୍ଗ ଖେଳ ବୋଲି। ରଙ୍ଗ ନ ଖେଳିଲେ ସେଠି ତା ମନ ଦୁଃଖ ହେଉଛି। ଏଇଥିପାଇଁ ବୋଧେ ଏତେ ବର୍ଷ ପରେ ସେ ନବ୍ୟା ହାତରେ ରଙ୍ଗ ପଠେଇଥିଲେ ମୋ ପାଇଁ।

ପୁଅ ବୋହୂ ମଧ୍ୟ ଟିକେ ରଙ୍ଗ ନେଇ ତାଙ୍କ ଗାଲରେ ଲଗେଇଦେଇ ଜୁହାର ହେଲେ। ଏକ ନୂଆ ଅନୁଭବ ସମସ୍ତଙ୍କୁ ଜଡେଇ ଧରିଥିଲା ଯେମିତି। ନବ୍ୟାକୁ ଟେକି ନେଇ ଗେଲ କରୁ କରୁ ଖୁସିରେ କହୁଥିଲେ ରାଜୀବ --ଟିକି ମା ମୋର। ତୋ ଲାଗି ଆମ ଜୀବନରେ ପୁଣି ଥରେ ରଙ୍ଗ ଭରିହେଇଗଲା। ଉପରେ ଥାଇ ଦେଖ ରାଧିକା, ଆମ କୁନି ନାତୁଣୀକୁ। ତୁମ ଇଛାକୁ ସେ କେମିତି ଆମ ପାଖରେ ଆଣି ପହଞ୍ଚାଇଦେଲା। ଏଣିକି ତୁମର ଆଜ୍ଞା ମାନି ଜୀବନର ରଙ୍ଗକୁ କେବେ ହେଲେ ଫିକା ହେବାକୁ ଦେବିନି। ଏବେ ଖୁସି ତ ?

କଣ ବୁଝିଲା କେଜାଣି ନବ୍ୟା ତା ଲାଲଟୁକଟୁକ ଓଠରେ ଏକ ଚୁମ୍ବନ ଆଙ୍କିଦେଲା ଜେଜେଙ୍କ ଗାଲରେ।

ମମତା ରାଣୀ ଆଚାର୍ଯ୍ୟ
ଦାମନଯୋଡ଼ି

ନାରୀ

ଜାୟା, ଜନନୀ, ଭଗିନୀ,
କେତେ ରୂପେ ସେ ବନ୍ଦିତା
ସ୍ନେହ, ପ୍ରେମର, ମମତାର ପ୍ରତୀକ ସେ
ସବୁ ରୂପେ ସେ ଅର୍ପିତା
ଅନାବିଳ ସ୍ନେହ ପ୍ରେମ
ହୃଦୟରେ ଭରି
ଅବାରିତ ବର୍ଷାର ଫୁଆରା ପରି
ଯାଏ ଝରି ଝରି।

କାଚକେନ୍ଦୁ ପରି ସ୍ୱଚ୍ଛ
ଯାର ପ୍ରେମର ପରଶ
ହରଷିତ ମନେ ସଦା ସର୍ବଦା
ସଭିଙ୍କୁ ଦିଅଇ ଆଶିଷ
ସେ ହେଉଛି ନାରୀ
ଅବଳା, ଦୁର୍ବଳା ନୁହେଁ ସେ
ଶକ୍ତିମୟୀ ନାରୀ
ତୁଚ୍ଛ ସବୁ ତା ଆଗେ
କେବେ କେହି ନୁହେଁ ସରି।

ଜନନୀ ସୃଷ୍ଟିର କର୍ତ୍ତା
ସେ ଧରିତ୍ରୀର
ତା ବିନା ଚାଲେ ନାହିଁ
ଏ ସାରା ସଂସାର
ସହନଶୀଳତାର ମୂର୍ତ୍ତିଟିଏ ଦୁନିଆର
ବୋଝ ତଳେ ଚାପି ହୋଇ
ତୁମ ଦୁନିଆକୁ ନିଜ
ପଣତକାନିରେ ସାଉଁଟି ଉଠାଇ
ଦୁଃଖର ଭାରରେ କେବେ
ହୁଏ ନାହିଁ ସେ ଅସ୍ଥିର
ବରଂ ଖୋଜେ ରାସ୍ତା
ସେ ଆଲୋକର
ସବୁବେଳେ ଦିଏ ଯିଏ ଶାନ୍ତିର ବାର୍ତ୍ତା
ସିଏ ହେଉଛି ନାରୀ

ଖୁସିର ଉଦ୍ଦିପନାର ଯେ ନାଚି ଉଠେନା
ବରଂ ଅନ୍ୟକୁ ଦିଏ ଆଶ୍ୱାସନା
ତା ଲାଗି ହସି ଉଠେ ଏ ଦୁନିଆ
ସେ ହେଉଛି ନାରୀ

ଆତ୍ମ ବଡ଼ିମା ନୁହେଁ ଆତ୍ମ ସ୍ୱାଭୀମାନ
ନାରୀର ସୁରକ୍ଷା ନାରୀର ସ୍ୱାଭୀମାନ
ସ୍ୱାଭୀମାନକୁ କବଚ କରି ଆଗେଇ ସେ
ପଥ ଚାଲେ ସେ ହେଉଛି ନାରୀ

ଶିଖା ନାୟକ
ଭୁବନେଶ୍ୱର

ସମ୍ପର୍କ

ସ୍ୱଳ୍ପ ଦିନର ଏହି ମଣିଷ ଜୀବନ
ଅତୁଟ ରଖ ସମ୍ପର୍କକୁ ଚାଲିଯିବ କେଉଁ କ୍ଷଣ।
ଧନ ସମ୍ପତ୍ତିର ମୋହ ଭାଙ୍ଗିଦିଏ ସମ୍ପର୍କର ସ୍ନେହ
ଯେପରି ଭଙ୍ଗା ଆଇନାରେ ମୁହଁ।

ସ୍ୱାର୍ଥଭରା ଅଶାନ୍ତ ମନ
ଯେପରି ଅଶାନ୍ତ ସମୁଦ୍ରର ଢ଼େଉ
କହିଦିଏ ବିବେକ ଶୂନ୍ୟ।
ହସ ସ୍ନେହରେ ଭରିଦିଅ ଅନ୍ୟର ଜୀବନ
ଜାଗି ନାହୁଁ ଶେଷ ନିଃଶ୍ୱାସର ସମୟ
ସ୍ୱଳ୍ପ ଦିନର ଏହି ମଣିଷ ଜୀବନ।

ମଣିଷ ଜୀବନର ଅର୍ଥ କ'ଣ ସ୍ୱାର୍ଥଭରା ମନ
ପ୍ରତ୍ୟେକ ମଣିଷ ଶ୍ମଶାନର ଆଗନ୍ତୁକ
ଶ୍ମଶାନରେ ହିଁ ସେ କ'ଣ ଶାନ୍ତ ?

ଯଉବନର ପାପ କର୍ମ ମନେପଡ଼େ ବାର୍ଦ୍ଧକ୍ୟରେ
ପଶ୍ଚାତାପରେ ଜର୍ଜରିତ ହୁଏ ମନ
ଛାଡ଼ିଯାଇ ପାରେନା ପ୍ରାଣ ଉପେକ୍ଷାରେ ମୃତ୍ୟୁ
ଭୟରେ କବଳିତ ହୁଏ ମନ।

ତେଣୁ ସ୍ୱଳ୍ପଦିନର ଏହି ମଣିଷ ଜୀବନ
ଅତୁଟ ରଖ ସମ୍ପର୍କକୁ ଚାଲିଯିବ କେଉଁ କ୍ଷଣ।

ପଦ୍ମଶ୍ରୀ ପଟ୍ଟନାୟକ

ଆକାଶ ଦୀପ

ବୋହୂ... ଏ ବୋହୂ....

ଅମ୍ବିକା ହଠାତ୍ ଚମକି ଉଠି ପଡ଼ିଲେ, ଆଖିରେ ଛାଇ ନିଦ ଘୋଟିଥିଲା ଆଉ ହଠାତ୍ ମନେହେଲା କିଏ ଯେମିତି ମୁଣ୍ଡ ପାଖରେ ଠିଆ ହୋଇ ଡାକୁଛି। ପରିଷ୍କାର ତାଙ୍କ ଶାଶୂଙ୍କ ସ୍ୱର। କ୍ଷଣିକ ପାଇଁ ବିସ୍ମରି ଯାଇଥିଲେ, ଶାଶୂ ଆଉ ଇହ ଜଗତରେ ନାହାନ୍ତି ବୋଲି। କାର୍ତ୍ତିକ ମାସର କ୍ଲାନ୍ତ ଅପରାହ୍ଣ, ଆଜି କାଲି ଏଇ ବେଳାଟା ତାଙ୍କୁ ଖୁବ୍ ଉଦାସ ଲାଗେ, ମୁଣ୍ଡ ବୁଲାଇ ଖୋଲା ଝର୍କା ଆଡ଼କୁ ଚାହିଁଲେ ଦିବସର ଶେଷ ମଳିନ ଆଲୁଅ ବଗିଚାର ଗଛପତ୍ର ଉପରେ ଲେସି ଯାଇଛି। ଏତେ ବଡ଼ ଘରଟା ଶୂନ୍ୟତାରେ ହାଇ ମାରୁଛି ଯେମିତି। ଶାଶୂଙ୍କ ଶ୍ରାଦ୍ଧକ୍ରିୟାରେ ବନ୍ଧୁବାନ୍ଧବମାନେ ଯୋଗ ଦେବାପାଇଁ ନିମନ୍ତ୍ରଣ ଉଦ୍ଦେଶ୍ୟରେ ଆଦିତ୍ୟ ବାହାରି ଯାଇଛନ୍ତି କେତେବେଳୁ। ଅମ୍ବିକା ଆଜିକାଲି ଚଲାବୁଲା କରି ପାରନ୍ତି ନାହିଁ, ବର୍ଷକ ତଳେ ସେରିବ୍ରାଲ ଆଟାକ୍ ଯୋଗୁଁ ଶରୀରର ଡାହାଣ ପାଖଟା ସମ୍ପୂର୍ଣ୍ଣ ଅଚଳ ହୋଇ ପଡ଼ିଛି କିନ୍ତୁ ଆଶ୍ଚର୍ଯ୍ୟ ମସ୍ତିଷ୍କ ତାଙ୍କର ସଚଳ ରହିଛି, କିଛିଦିନ ତଳେ ସବୁ ଭୁଲିଯାଇଥିଲେ କିନ୍ତୁ ଡାକ୍ତରି ଟ୍ରିଟ୍‌ମେଣ୍ଟ ଦ୍ୱାରା ମାନସିକତା ଦୃଷ୍ଟିରୁ ସେ ଏବେ ସୁସ୍ଥ ଅଛନ୍ତି। ତାଙ୍କୁ ଦେଖାଶୁଣା କରୁଥିବା ମାଳତୀ ନାମ୍ନୀ ଝିଅଟା ଏବେ ନିଶ୍ଚୟ ଶୁଖିଲା ଲୁଗା ତୋଳିବା ବାହାନାରେ ଛାତକୁ ଯାଇ ପାଖ ମେସ୍‌ର ଝାମ୍ପୁରା ମୁଣ୍ଡା ଟୋକାଟା ସହିତ ଗପର ଆଡ୍ଡା ଜମେଇଥିବ। ଶାଶୂ ଖରାବେଳେ ତାଙ୍କୁ କେତେଥର ଚେତାଇଥିଲେ। ଦେଖ ବୋହୂ ପର ଘରର ବଢ଼ିଲା ଝିଅଟା, ତାର ପୁରୁଷ ସହିତ ଏପରି ଫାଜଲାମି କାହିଁକି? ଦିନକାଳ ଭଲ ନାଇଁ ତାକୁ ଆକଟ କରୁନ କାହିଁକି? ଶିକ୍ଷିତା ନାରୀଟିର ଏ ନିମ୍ନସ୍ତରର ମାନସିକତା ପାଇଁ ମନେ ମନେ ବିରକ୍ତ ହୁଅନ୍ତି ଅମ୍ବିକା। ଏ ବୟସ୍କ ମଣିଷ ଗୁଡ଼ାକଙ୍କର ଏ ଗୋଟାଏ ରୋଗ ସବୁବେଳେ ପର କଥାରେ ମୁଣ୍ଡ ଗଳେଇବେ, ନିଜେ ବ୍ୟସ୍ତ ହେବେ ଆଉ ଅନ୍ୟର ବି ଶାନ୍ତିରେ ବିଘ୍ନ ଘଟାଇବେ। ଜାଣି ଜାଣି ନ ଶୁଣି ପାରିବାର ବାହାନା କରନ୍ତି ଅମ୍ବିକା। ଏ ଘରକୁ ବୋହୂ ହୋଇ ଆସିବା ଦିନରୁ ଶାଶୂଙ୍କର ଅନେକ କଥା ଭଲ ଲାଗେନି ତାଙ୍କୁ। ଶାଶୂ ତାଙ୍କର ସରକାରୀ କଲେଜରେ ମନସ୍ତତ୍ତ୍ୱର ଅଧ୍ୟାପିକା ଥିଲେ, ଅଥଚ ଦେଖ ଢଙ୍ଗଢାଙ୍ଗା ନିପଟ ଗାଉଁଲି ଭଳି! ଶଶୁରଙ୍କୁ ଦେଖିନି ସେ। ଆଦିତ୍ୟଙ୍କ ସ୍କୁଲ ବୟସବେଳେ ଶଶୁର ଦୁର୍ଘଟଣାରେ ପଡ଼ି ଚାଲିଗଲେ। ବନ୍ଧୁବାନ୍ଧବମାନେ ଅସହାୟ ମାଆ, ପୁଅର ଫାଇଦା ଉଠାଇ ମୁହଁ ଲୁଚା ଦେଲେ। ଯୁବତୀ ବୟସରେ ସ୍ୱାମୀ ହରାଇ ଏକଲା ପୁଅକୁ ମଣିଷ କଲେ। ପାଞ୍ଚ ବର୍ଷ ହେଲାଣି ଶାଶୂ ଚାକିରୀରୁ ଅବସର ନେଇଛନ୍ତି, ଅମ୍ବିକାଙ୍କ ସ୍ୱାମୀ ଏବେ ବଡ଼ ସରକାରୀ ଅଫିସର ଜଣେ। ଅମ୍ବିକାଙ୍କ ଜୀବନରେ କୌଣସି ଅଭାବ ନ ଥିଲା, ଥିଲା କେବଳ ଗୋଟିଏ ଜୀବନ୍ତ କଣ୍ଢେଇର ଯାହାକୁ ନେଇ ନାରୀର ମାତୃତ୍ୱ ସାର୍ଥକ ହୁଏ। ଆଦିତ୍ୟଙ୍କର କୌଣସି ଅବଶୋଷ ନାହିଁ କି ଏ ବ୍ୟାପାରରେ ଶାଶୂ ମଧ୍ୟ କୌଣସି ଆକ୍ଷେପ କରି ନାହାନ୍ତି, ବରଂ ଏଥିନେଇ ଦୁଃଖ କଲେ ଶାଶୂ ଅନ୍ତରଙ୍ଗ ବାନ୍ଧବୀଟିଏ ପରି ବୁଝାନ୍ତି ତାଙ୍କୁ। ଶାଶୂଙ୍କର ଏତେ ସବୁ ଭଲ ଗୁଣ ସତ୍ତ୍ୱେ କାହିଁକି ଯେ ତାଙ୍କୁ ନିଜର ବୋଲି ଭାବି ପାରନ୍ତି ନାହିଁ ଅମ୍ବିକା ତାର ଗୋଟିଏ ବିଶିଷ୍ଟ କାରଣ ହେଲା ଶାଶୂଙ୍କର ସବୁକଥାରେ ଅତିରିକ୍ତ ବାରଣ। ଏଇ ଧର ଆମିଷ ଖିଆ କଥାଟାକୁ ଧରାଯାଉ ଆଜକୁ ଦଶବର୍ଷ ହେଲାଣି ସେ ଏ ଘରେ ବୋହୂ ହେଲେ ଶାଶୂଙ୍କର ନିର୍ଦ୍ଦେଶ କାର୍ତ୍ତିକ ମାସରେ ଘରେ ଆମିଷ ପଶିବନି। ଆମିଷ ବିନା ବଞ୍ଚିବେ କେମିତି ଅମ୍ବିକା? ଭାତ ଥାଳିରେ ଯେମିତି ହେଲେ ଆଇଁଷ ଟିକେ ପଡ଼ିବ ନ ହେଲେ ପାଟିକୁ ଗୁଣ୍ଡା ଉଠିବନି, ସାଧା ଘାସ ବୁରୁଜ ଗାଈ ଗୋରୁଙ୍କ ଖାଦ୍ୟ, ମଣିଷ କେମିତି ଖାଇବ? ଆମିଷ ବିନା ଭାତଥାଳି ଦେଖିଲେ କାନ୍ଦଲାଗେ ତାଙ୍କୁ ଅଥଚ ଶାଶୂଙ୍କର ପୂଝାରିକୁ କଡ଼ା ନିର୍ଦ୍ଦେଶ କେବେଳ କାର୍ତ୍ତିକ ମାସ ନୁହେଁ କେତେକ ବିଶିଷ୍ଟ ବାର ଆଉ ତିଥିରେ ରୋଷେଇଶାଳରେ ଆମିଷ ପ୍ରବେଶ ନିଷିଦ୍ଧ। ମନେ ମନେ ଗଜଗଜ ହୁଅନ୍ତି ଅମ୍ବିକା ବୁଢ଼ୀ ନିଜେ ତ ଖାଏନି, କେହି ଖାଇଲେ ସହି ପାରେନି, କି ମିଳିବ ଏ ପୂଜା ପାଠରେ? ସ୍ୱର୍ଗକୁ କଣ ସିଧାସିଧା ନିଶୁଣୀ ଲାଗିଯିବ? ଯେତେ ସବୁ ଅନ୍ଧବିଶ୍ୱାସ! ମନ ଯାହା ଚାହୁଁଛି ତାହାହିଁ କର, ପାପ ପୁଣ୍ୟ ବୋଲି ଏ ଦୁନିଆରେ କିଛି ନାହିଁ। ଏହାହିଁ ବିଶ୍ୱାସ ଅମ୍ବିକାଙ୍କର। ଅମ୍ବିକାଙ୍କର ହାବଭାବ ଶାଶୂଙ୍କ ଆଖିରେ ବେଳେବେଳେ ଧରା ପଡ଼ିଯାଏ ତାଙ୍କୁ ଚାହିଁ ନିରବରେ ମିଠା ହସଟିଏ ହସିଦିଅନ୍ତି ଶାଶୂ, ଏ ଯେମିତି କଟା ଘା'ରେ ଲୁଣ ଛିଟା, ରାଗରେ ସର୍ବାଙ୍ଗ ଜଳିଉଠେ ତାଙ୍କର।

କାର୍ତ୍ତିକ ମାସ ଗୋଟିଏ ଧର୍ମମାସ, ପୂଜାପାଠ, ଧର୍ମକର୍ମ କଲେ ତାର ସୁଫଳ ନାନା ପୋଥିପୂରାଣ କଥା ଉଦ୍ଧାର କରି ଅମ୍ବିକାଙ୍କର ମନକୋଣରେ ପବିତ୍ରତାର ବୀଜଟିଏ ବପନ କରି ଅଙ୍କୁରିତ କରି ତୋଳିବାର ପ୍ରୟାସ ଚଳାନ୍ତି ଶାଶୂ, ଅମ୍ବିକାଙ୍କୁ ଏ ସବୁ ଧର୍ମ ଫର୍ମ ଖାଲି ପ୍ରହସନ ମନେହୁଏ। ଟିଭିରେ କେତେ ଭଲ ଭଲ ସିରିଏଲ ଚାଲୁଛି ତାର ମୋହ ଛାଡ଼ି ଏ ନୀରସ ପୋଥି ପୁରାଣରୁ କ'ଣ ମିଳିବ? ନାନା ଆଳ କରି ଶାଶୂଙ୍କ ପାଖରୁ ଉଠି ପଳାନ୍ତି ସେ। କାର୍ତ୍ତିକ ମାସରେ ବି ଶାଶୂଙ୍କୁ ଲୁଚାଇ ଜମାଟୋ, ସ୍ୱିଗିରୁ କେତେଥର ଆମିଷ ମଗାଇ ବେଡ୍‌ରୁମ୍‌ରେ କବାଟ କିଳି ଉଦରସ୍ଥ କରିଛନ୍ତି ସେ, ଶାଶୂ ତାର ସୁରାକ ବି ପାଇ ନାହାନ୍ତି କେବେ। ଶାଶୂଙ୍କର ବୋହୂ ବୋଲି ଡାକଟା ବି ତାଙ୍କ କାନକୁ ଖୁବ୍ ବେଖାପ ଶୁଭେ, ଅମ୍ବିକାଙ୍କର

ନାଁ ନାହିଁ ? ବୋହୁ ଡାକଟା ଗୋଟିଏ ମଧ୍ୟଯୁଗୀୟ ମାନ୍ଧାତା ଅମଳର ସଂସ୍କାର। ବିଳମ୍ବରେ ବିଛଣା ଛାଡ଼ିବା ଅମ୍ବିକାଙ୍କର ପୁରୁଣା ଅଭ୍ୟାସ, ଆଉ ଏ ବୁଢ଼ୀ ଖଣ୍ଡକ କାର୍ତ୍ତିକମାସ ଗୋଟାକ, ରାତି ତିନିଟାରୁ ଉଠି ଗାଧୁଆ ପାଧୁଆ ସାରି, ବାଡ଼ିରୁ ଫୁଲତୋଳି ଅନ୍ଧାର ଥାଉଥାଉ ରାଧାଗୋବିନ୍ଦଙ୍କ ମନ୍ଦିରକୁ ଚାଲିଯିବେ। ମନ୍ଦିରଟା ତାଙ୍କ ଘର ପାଖରେ, ଝର୍କା ଖୋଲିଲେ ମନ୍ଦିର ଚତ୍ୱର ଦେଖାଯାଏ। ସାହିର ଏମିତି ଆହୁରି କେତେ ମହିଳା ଯୁଟିଥାନ୍ତି। ହୁଳହୁଳି ଶଙ୍ଖଧ୍ୱନିରେ ପାହାନ୍ତିଆର ନିଶବ୍ଦତା ଥରିଉଠେ। ଅମ୍ବିକାଙ୍କ ଶୋଇବା ଘର ଝର୍କା ଭିତରେ ପଶିଆସେ। ପାହାନ୍ତିଆର ସୁଖ ନିଦ୍ରାରେ ବ୍ୟାଘାତ ଘଟେ, କଷିକରି ଝର୍କା ବନ୍ଦ କରି ଦିଅନ୍ତି। ସନ୍ଧ୍ୟାବେଳେ ପୁଣି ଆଉ ଗୋଟିଏ ପାଳା ଆକାଶ ଦୀପ ଉଠିବା। କାର୍ତ୍ତିକମାସରେ ଆକାଶଦୀପ ଜାଳିବା ନେଇ ତାର ଯେ କେତେ ଉଦ୍ଦେଶ୍ୟ ରହିଛି ଶୁଣାନ୍ତି ଶାଶୂ, ଅମ୍ବିକାଙ୍କର ଆଗ୍ରହହୀନତା ଦେଖି ନୀରବି ଯାନ୍ତି କ୍ରମେ। ଅମ୍ବିକା ଭାବି ପାରନ୍ତି ନାହିଁ ଶାଶୂ ତାଙ୍କର ଏତେ ଶିକ୍ଷିତା ହୋଇ ମଧ ମୂର୍ଖ ସ୍ତ୍ରୀ ଲୋକଙ୍କ ମେଳରେ କେମିତି ଯେ ନିଜକୁ ଖାପଖୁଆଇ ନିଅନ୍ତି ସ୍ୱରରେ ସ୍ୱର ମିଳାଇ ପ୍ରାର୍ଥନା ବୋଲନ୍ତି, ହୁଳହୁଳି ଦିଅନ୍ତି।

ଅମ୍ବିକା କିନ୍ତୁ ଠିକ୍ ଏହାର ବିପରୀତ ଅତ୍ୟାଧୁନିକ ଜୀବନ ଶୈଳୀର ସେ ପକ୍ଷପାତୀ, କ୍ଲବ୍, ପାର୍ଟି ମଉଜ ମଜଲିସ୍ ଭିତରେ ଜୀବନର ସ୍ୱାଦ ଖୋଜନ୍ତି ଯେ। ବିଛଣାରେ ଏବେ ବର୍ଷେ ହେଲା ପଡ଼ି ରହି ସେ ଏବେ ନୂତନ ଆଖିରେ ଦୁନିଆକୁ ଦେଖିବାକୁ ଚେଷ୍ଟା କରନ୍ତି। ଯେଉଁ ପ୍ରାର୍ଥନା ତାଙ୍କ କାର୍ଯ୍ୟକୁ ବିବ୍ରତ କରୁଥିଲା ଠାକୁରଘରେ ଶାଶୂ ଗୁଣୁଗୁଣୁ ହୋଇ ବୋଲିଲା ବେଳେ କାନ ପାରି ଶୁଣିବାକୁ ଚେଷ୍ଟା କରନ୍ତି। ତାଙ୍କର ଏମିତି ହଠାତ୍ ଅସୁସ୍ଥ ହୋଇ ଶଯ୍ୟାଶାୟୀ ହେବାରେ ଶାଶୂ ତାଙ୍କ ପାଇଁ କେତେ କାନ୍ଦିଥିଲେ ନିଜର ଦିଅଁ ଦେବତାଙ୍କ ପାଖରେ ଅମ୍ବିକାଙ୍କ ଆରୋଗ୍ୟ କାମନା କରି ଭାରି ଗୁହାରି କରି ବ୍ରତ, ଉପବାସ ପାଳିଥିଲେ, ଏବେ ଶାଶୂଙ୍କ ଅବର୍ତ୍ତମାନରେ ସେ କଥା ମନେ ପଡ଼ିଲେ ଆଖିରେ ଲୁହଭରି ଉଠୁଛି। କାର୍ତ୍ତିକ ପୂର୍ଣ୍ଣିମା ଚାରିଦିନ ଥିଲା ବଡ଼ ଏକାଦଶୀ ତିଥିରେ ସବୁଦିନ ଭଳି ଶାଶୂ ମନ୍ଦିର ଯାଇଥିଲେ ଠାକୁରଙ୍କ ସାମ୍ନାରେ ମୁଣ୍ଡ ନୁଆଁଇ ପ୍ରଣାମ କରୁକରୁ ଟଳିପଡ଼ିଲେ, ଡକରା ପାଇ ଆଦିତ୍ୟ ପାହାନ୍ତିଆଟାରେ ମନ୍ଦିର ଧାଇଁଥିଲେ, ସେତେବେଳକୁ ସବୁ ଶେଷ। ବିଛଣାରେ ପଡ଼ିଥିଲି ଜଳ ଜଳ ଦେଖୁଥିଲେ ଅମ୍ବିକା ଶାଶୂଙ୍କ ନିର୍ଜୀବ ଶରୀରଟାକୁ ସଜାଗଲା। ନାନା ସୁଗନ୍ଧିତ ଧଳା ଫୁଲରେ, ଅନେକ ମଣିଷଙ୍କ ଆକୁଳ କ୍ରନ୍ଦନ ରୋଳ, ହରିବୋଲ ସଂକୀର୍ତ୍ତନ ଧ୍ୱନି ମଧ୍ୟରେ କୋକେଇ ଉଠିଲା। ସବୁଦିନ ପାଇଁ ଚାଲିଗଲା ତାଙ୍କ ପାଖ ମଣିଷ ଜଣେ। ଅମ୍ବିକାଙ୍କର ଇଚ୍ଛା ହୋଇଥିଲା ସେହି ନିର୍ଜୀବ ଶରୀରଟାକୁ ଥରେ ଅନ୍ତରଙ୍ଗ ଭାବରେ ଜଡ଼ାଇ ଧରି ନିଜ ଆଖି ଲୁହରେ ତାଙ୍କ ପାଦ ଦିଟା ଭିଜାଇ ସବୁ ପାପ ସ୍ୱୀକାର କରି ନିଅନ୍ତେ ହେଲେ, ରୋଗ ନାହିଁ, ଶୋକ ନାହିଁ, କୌଣସି କଷ୍ଟ ନାହିଁ, ଚଳଚଞ୍ଚଳ ମଣିଷଟା କେମିତି ହଠାତ୍ କାର୍ତ୍ତିକର ପୁଣ୍ୟ ତିଥିରେ ଚାଲିଗଲେ ଅଥଚ ଅମ୍ବିକା ନିଜେ ଅଚଳ ଶରୀରଟାକୁ ଧରି ପ୍ରତି ମୁହୂର୍ତ୍ତରେ ଜୀଇଁବାକୁ ସଂଗ୍ରାମ ଚଳାଇଛନ୍ତି। ବୋଧ ହୁଏ ଶାଶୂ ଠିକ୍ କରୁଥିଲେ ପୁଣ୍ୟକର୍ମ, ଧର୍ମର ଗୋଟିଏ ପ୍ରଚଣ୍ଡ ଶକ୍ତି ରହିଛି ଯାହା ଅଦୃଶ୍ୟ ହେଲେ ବି ସତ୍ୟ। ଶାଶୂଙ୍କ ଅନୁପସ୍ଥିତିରେ ଆଜକୁ ଚାରିଦିନ ହେଲା ଘରଟା ଶୂନ୍ୟତାରେ ଦୀର୍ଘଶ୍ୱାସ ଛାଡୁଛୁ। ସନ୍ଧ୍ୟାର ହାଲକା କୁହୁଡ଼ି ମିଶା କଳା ଚାଦର ଯେମିତି ବିଛାଇ ପଡ଼ିଛି। ରାଧାଗୋବିନ୍ଦଙ୍କ ମନ୍ଦିର ଚତ୍ୱରରେ ମହିଳାମାନଙ୍କ ଭିଡ଼, ହୁଳହୁଳି ଧ୍ୱନିରେ ଆକାଶ ଦୀପ ଉଠୁଛି। ଆଜି କାର୍ତ୍ତିକ ପୂର୍ଣ୍ଣିମା ଆକାଶରେ ପୂର୍ଣ୍ଣିମାର ଚାନ୍ଦ ଦାଉଦାଉ ଜଳିବା କଥା କିନ୍ତୁ ମେଘ ଆଉ କୁହୁଡ଼ି ଭିତରେ ସବୁ ଯେମିତି ଧୂଆଁଳିଆ, ଅସ୍ପଷ୍ଟ। ଶାଶୂ ଥିଲେ ଆଜି ତାଙ୍କ କାର୍ତ୍ତିକବ୍ରତର ଶେଷ ଦିନ। ଏଇ ମୁହୂର୍ତ୍ତରେ ଶାଶୂଙ୍କ ଶୂନ୍ୟତା ତାଙ୍କୁ ବ୍ୟଥାତୁର କରି ତୋଳୁଛି। ଝର୍କା ବାହାରକୁ ଏକ ଲୟରେ ଚାହିଁ ରହିଛନ୍ତି ଅମ୍ବିକା। ଶେଷ କାର୍ତ୍ତିକରେ ନିଃସଙ୍ଗ ଆକାଶରେ ଲମ୍ବା ଗୋଟିଏ ବାଉଁଶ ଅଗରେ ଆକାଶ ଦୀପ ମିଞ୍ଜିମିଞ୍ଜି ଜଳି ତାର ଉପସ୍ଥିତି ଜାହିର କରୁଛି। ଅମ୍ବିକା ଭାବୁଛନ୍ତି ତାଙ୍କ ଶାଶୂ ବି ଆକାଶ ଦୀପଟିଏ ପରି ପୁଣ୍ୟ ପବିତ୍ର ଥିଲେ। ଅମ୍ବିକାଙ୍କ ଜୀବନ ଆକାଶକୁ କିଞ୍ଚିତ ଆଲୋକିତ କରିବାର ପ୍ରୟାସ କରିଥିଲେ। ଆଜିବି ଆକାଶ ଦୀପ ସାଜି ସସ୍ନେହରେ ଆଶିଷ ଢ଼ାଳି ଦେଇଛନ୍ତି ତାଙ୍କ ଉପରେ।

ଡ. ସ୍ୱାତୀ ଚାଟାର୍ଜୀ
ଦାମନଯୋଡ଼ି

"

ଈଶ୍ୱରଙ୍କୁ ଯେମିତି ପ୍ରାର୍ଥନା କଲେ ବି, ତାହା ତାଙ୍କ ପାଖରେ ପହଞ୍ଚିଯାଏ। ଧ୍ୟାନ ରଖିବା ଉଚିତ ଯେ ଭଗବାନ ପିମ୍ପୁଡ଼ିର ପାଦଶବ୍ଦ ବି ଶୁଣି ପାରନ୍ତି।

"

- ରାମକୃଷ୍ଣ ପରମହଂଶ

ଲିଲି ମା'ଙ୍କର ମହିଳା ଦିବସ

ମହିଳା ଦିବସ ଆସେ ଆଉ ଚାଲିଯାଏ। ଆମେ ସମସ୍ତେ ନାରୀ ସଶକ୍ତିକରଣର କଥା କହୁ। ପୁରୁଷଙ୍କ ସହ କାନ୍ଧରେ କାନ୍ଧ ମିଶାଇ ଚାଲିବାର ପ୍ରୟାସ କରୁ। କିଛି ପରିମାଣରେ ସଫଳ ବି ହୋଇଛୁ ଆମେ। ଆଗକୁ ମାଡ଼ିଯିବାର ଅନେକ ସ୍ୱପ୍ନ ଦେଖୁ ଆମେ। କିନ୍ତୁ ଅନେକ ସ୍ୱପ୍ନ ଅଧା ହୋଇ ରହିଯାଏ।

ସୁଦୂର କେନ୍ଦ୍ରାପଡ଼ାର କେଉଁ ଏକ ଛୋଟ ଗାଁର ଝିଅ ହେଲେ ଲିଲିର ମାଆ, ଗାଁ ସ୍କୁଲରେ ସେ ଓ ଆଉ ଅନ୍ୟ ଝିଅମାନେ ପାଠ ପଢ଼ିବାକୁ ଯାଆନ୍ତି। ସେତେବେଳେ ଝିଅମାନଙ୍କ ପାଠପଢ଼ା ଏକ ସ୍ୱପ୍ନ କହିଲେ ଅତ୍ୟୁକ୍ତି ହେବନାହିଁ। ଯେଉଁ କେତେ ଜଣ ପାଠ ପଢୁଥିଲେ ତାଙ୍କ ବାପା ମାଆ ସେ ଯୁଗରେ ଅନ୍ୟମାନଙ୍କଠାରୁ ନିଆରା ଥିଲେ। ପାଠ ପଢ଼ି ସାରି ସ୍କୁଲରୁ ଫେରିଲେ ଘର କାମ ବି କରିବାକୁ ପଡ଼େ ସେମାନଙ୍କୁ। ଲିଲିର ମାଆ ଏକ ଭିନ୍ନ ଧରଣର ମହିଳା ଥିଲେ। ପିଲାବେଳରୁ ଲେଖାଲେଖି କରିବାରେ ତାଙ୍କର ପ୍ରବଳ ଆଗ୍ରହ ଥିଲା। ନିଜେ ଲେଖିବା ସହ ତାଙ୍କର ସହପାଠୀ, ଉପର ଶ୍ରେଣୀ ଓ ତଳ ଶ୍ରେଣୀର ଝିଅମାନଙ୍କୁ ଲେଖିବା ପାଇଁ ପ୍ରବର୍ତ୍ତାଉଥିଲେ। ସମସ୍ତେ ମିଶି ସେତେବେଳେ ହାତରେ ଲେଖି ପତ୍ରିକା ପ୍ରକାଶ କରୁଥିଲେ ପତ୍ରିକାଟିକୁ ଜଣେ ପଢ଼ିସାରିଲେ ଆଉ ଜଣଙ୍କୁ ପଢ଼ିବାକୁ ଦିଆଯାଏ। ଏମିତି କରି ସମସ୍ତେ ହାତଲେଖା ପତ୍ରିକା ପଢ଼ନ୍ତି। ଫେରିବାଲା ସେତେବେଳେ ଛୋଟଛୋଟ କଟା କନା ଆଉ ହାତରେ ଏମ୍ବ୍ରୋଡରୀ କରିବା ପାଇଁ ସୂତା ଆଣେ। ସମସ୍ତେ ଚାଉଳ ଦେଇ ତାକୁ କିଣନ୍ତି। ଆଉ ସାଙ୍ଗ ହୋଇ ସ୍କୁଲରୁ ଆସିବା ପରେ ସୁନ୍ଦର ସୁନ୍ଦର ଚିତ୍ର ଆଙ୍କି ଏମ୍ବ୍ରୋଡରୀ କରନ୍ତି। ଶ୍ରୀକୃଷ୍ଣଙ୍କଠାରୁ ଆରମ୍ଭ କରି ହରିଣ, ଶୁଆଙ୍କର ବହୁତ ସୁନ୍ଦର ଏମ୍ବ୍ରୋଡରୀ କରନ୍ତି। ଏବେ ବି ଲିଲି ମାଆଙ୍କର ହାତ ତିଆରି ସାଇତା କିଛି ଏମ୍ବ୍ରୋଡରୀ ଦେଖି ଆଶ୍ଚର୍ଯ୍ୟ ହେବାକୁ ପଡ଼େ। ସେତେବେଳ ଯୁଗରେ ବି ସେମାନେ କେତେ କରିପାରିଥିଲେ କିଛି ବି ସୁବିଧା ନ ଥାଇ କି, ଭାବିଲେ ଆଶ୍ଚର୍ଯ୍ୟ ଲାଗେ।

ଧିରେ ଧିରେ ଲିଲିର ମାଆଙ୍କ ଘରେ ଆର୍ଥିକ ପରିସ୍ଥିତି ଖରାପ ହେବାକୁ ଲାଗିଲା। ଲିଲିର ଆଈ ଆଉ ଲିଲିର ମାଆଙ୍କୁ ପାଠ ପଢ଼ିବାକୁ ଦେଲେ ନାହିଁ। କହିଲେ ଝିଅମାନଙ୍କୁ ପାଠ ପଢ଼ିବାକୁ ଦେବାରୁ ସବୁ ପଇସା ତ ସରି ଯାଉଛି। ପୁଅ ହିଁ ପାଠ ପଢୁ। ରୋଜଗାର କଲେ ଆମକୁ ଦେଖିବ। ଲିଲିର ମା'ଙ୍କର ପାଠପଢ଼ାରେ ଡୋରି ବନ୍ଧାହେଲା। ଭଲ ବରପାତ୍ର ଦେଖି ଲିଲିର ମା'ଙ୍କର ବିବାହ ହୋଇଗଲା। ତାଙ୍କ ଜୀବନର ସବୁ ସ୍ୱପ୍ନ ଯେମିତି ଚୁରମାର ହୋଇଗଲା। ଶାଶୂଘର ଜଞ୍ଜାଳ ରୋଷେଇ ବାସ ସବୁ ଭିତରେ ଲିଲିର ମାଆ ଅଣନିଶ୍ୱାସୀ ହୋଇଯାଉଥିଲେ। ତା ପରେ ଲିଲି ଜନ୍ମ ନେଲା। ତାଙ୍କର ପାଠ ପଢ଼ିବାର ଇଚ୍ଛାଟି ଯେମିତି ମନ ଭିତରେ ଦିକ୍ ଦିକ୍ କରି ଜଳୁଥିଲା। ଲିଲିର ବାପା ଲିଲିର ମାଆଙ୍କର ମନର ବ୍ୟଥା ବୁଝିପାରିଥିଲେ। ସେ ତାଙ୍କର ପାଠପଢ଼ାର ସୁବନ୍ଦୋବସ୍ତ କରି ଦେଇଥିଲେ ନିଜର ପ୍ରତ୍ୟକ୍ଷ ତତ୍ତ୍ୱାବଧାନରେ। ଧିରେ ଧିରେ ଲିଲିର ମାଆ ଗ୍ରାଜୁଏସନ୍ କରି ବି.ଏଡ୍ ବି କଲେ। ଶିକ୍ଷୟିତ୍ରୀ ହୋଇ ହାଇସ୍କୁଲରେ ଜଏନ କରି ପ୍ରଧାନ ଶିକ୍ଷୟିତ୍ରୀ ହୋଇ ଅବସର ବି ନେଲେଣି। ଲେଖାଲେଖି କରି ଅନେକ ସୁନାମ ଅର୍ଜନ କଲେ। ଯେତେବେଳେ ମହିଳା ଦିବସ ଆସେ, ଲିଲିର ମାଆ ଭାବନ୍ତି କ'ଣ ଗୋଟିଏ ଦିନ ମହିଳା ଦିବସ ପାଳନ କଲେ ଯଥେଷ୍ଟ ହେବ କି ? ଏମିତିରେ ସବୁଦିନ ସବୁ ମୁହୂର୍ତ୍ତ ମହିଳାମାନଙ୍କର।

ସୀମା ମିଶ୍ର
ଦାମନଯୋଡ଼ି

ଯତ୍ର ନାର୍ଯ୍ୟସ୍ତୁ ପୂଜ୍ୟନ୍ତେ ରମନ୍ତେ ତତ୍ର ଦେବତାଃ।
ଯତ୍ରୈତାସ୍ତୁ ନ ପୂଜ୍ୟନ୍ତେ ସର୍ବାସ୍ତତ୍ରାଫଳାଃ କ୍ରିୟାଃ।।
- ମନୁସ୍ମୃତି

Basant Panchami

Basant Panchami can literally be translated as "Yellow" Panchami. This is the day we propitiate Goddess Saraswati. People drape themselves with yellow clothes and also share yellow sweets. These symbolic things have very deep historical and mythological significance.

We in India follow luni-solar calendar and we know that Makar Sankranti is on 14-15 January. And, that the Sun has already started its 'Northwards' journey from the Tropic of Capricorn (Makar). With these celestial occurring, bitter cold in the Northern parts of India slowly gives way to pleasant weather. Basant Panchami is on the fifth day of the waxing moon (Sukla Paksha) in the month of Magha. This corresponds to the months of January/February in the Gregorian calendar. And starting from this day, Spring tip-toes in and goes into full bloom by Holi.

The mythical, mighty and the elusive river Saraswati was a Himalayan river which carries great significance in the Hindu mythology. Advent of the Spring heralded glacial melting which resulted in swelling up the river Saraswati. Mustard plants along its banks would soon go into full bloom thus draping the river like a giant miles long yellow saree producing a truly majestic and mesmerising sight. Legends also hold that hundreds of rishis and maharishis used to dwell along the banks of this river. It is said the great sage Ved Vyas also lived on its banks. Some also trace the origins of Vedas and Upanishads to these very rishis and maharishis. Metaphorically, knowledge 'flowed' along with the river Saraswati. Thus the direct association of the colour yellow or 'Basanti' and 'knowledge' with the river which was named after the Goddess Saraswati is so apt. Basant Panchami is a sacred day on which we not only worship the Goddess but also celebrate knowledge and also initiate learning and writing in the young children.

As an ode to the syncretic culture of India, this day is celebrated in different iterations by different communities. People in Punjab have traditionally celebrated the Basant festival on this day by wearing resplendent yellow apparel. People in the neighbouring country are also known to celebrate the season of Basant by flying kites. Sufi Basant is its yet another iteration where it is celebrated by a particular order of the Sufis at the dargah of Nizammuddin Auliya. This day is a great proof of the strong bond shared by the people of this great country, India who have a common history. It is also a great tribute to the intelligence of the people of ancient India who could link so beautifully such complex concepts of divinity, spirituality and knowledge.

Prajna Parida

Angul

Swami Vivekananda
The modern face of Hinduism

Born on 12th Jan 1863 at Kolkata, Narendranath Datta was a bright boy inclined to spirituality. Attracted to

Brahmo Samaj and influenced by mentor Swami Ramakrishna, he took the monastic vows in 1886 at the age of

23, with the name of Vivekananda "the bliss of wisdom".

Swami Vivekananda is popular for introduction of Vedanta and Yoga to the Western world and is credited with

raising interfaith awareness, and bringing Hinduism to the status of a major world religion at a time when

politically India was a British Colony, and the supreme white race expected to enlighten the rest of the world.

In 1893, Vivekananda embarked on his first journey to the western world via China, Japan and Canada, reaching

Chicago to participate at the World Parliament of Religions in Sep 1893. His famous speech starting with

"Sisters and brothers of America" happened here, which mesmerised the audience completely. He greeted USA as the youngest of the nations, on behalf of "the most ancient order of monks in the world, the Vedic order of

sannyasis, a religion which has taught the world both tolerance and universal acceptance". The New York

Herald noted, "Vivekananda is undoubtedly the greatest figure in the Parliament of Religions. After hearing him we feel how foolish it is to send missionaries to this learned nation".

Following the Parliament of Religions, Vivekananda delivered hundreds of lectures across the United States,

England and Europe, disseminating the core tenets of Hindu philosophy. "I do not come", said Swamiji on one

occasion in America, "to convert you to a new belief. I want you to keep your own belief; I want to make

the Methodist a better Methodist; the Presbyterian a better Presbyterian; the Unitarian a better Unitarian. I want

to teach you to live the truth, to reveal the light within your own soul".

Swami Vivekananda founded Vedanta Society of New York and the Vedanta Society of San Francisco

(now Vedanta Society of Northern California), both of which became the foundations for Vedanta Societies in the

West.

He established the Ramakrishna Math, at Belur, Kolkata for spiritual training for monastics and householder

devotees, and founded the Ramakrishna Mission (1897) - to provide charity, social work and education.

He propagated the idea that "the divine, the absolute, exists within all human beings regardless of social

status", and that "seeing the divine as the essence of others will promote love and social harmony".

Mahatma Gandhi counted him among the few Hindu reformers "who have maintained this Hindu religion in a

state of splendour by cutting down the dead wood of tradition.

Swami Vivekananda left for his heavenly abode on 04th Jul 1902, at the young age 39. However, he stands tall in

the spiritual and cultural map of India. His birthday, 12th Jan is celebrated as National Youth Day in India.

Our obeisance to the great monk, philosopher, author and religious guru.

Namita Sahoo
Bhubaneswar

Musings on International Women's Day....

The land of Maitreyi,
Lopamudra and Gargi,
the land of Sarojini Naidu and
Shakuntala Devi
have reasons to smile, smiles of celebratory contentment for,
the world rises to recognise
her achievement.

The heart overflows with
compassion and empathy,
woman, you make the world a
better place to live in.
The legacy of the scholars,
artists, nurses, architects and
patriots continues,
with the fabric of the nation
inspired.

Taking care of the hearth of home
she essays roles myriad selflessly
to render everyone's life comfortable
and convenient.

Having risen with the sun, she invokes
the benediction of the Almighty for
everyone's welfare.
An ear for every soul's woes,
promising a smile genuine sees her
through.
She, the lady of the household truly, an
embodiment of values and virtues.

Let's celebrate the femine energy
endowed with the capacity to create,
preserve, sustain life incessant this
Women's Day.

The janmabhoomi of ours, the
tapobhoomi of the mystic and saintly
reverberates with humanity and equality
to empower the women of the land, hail
Women's Day.

Sujata Pani
Damanjodi

UNFORGETTABLE NETAJI

Subhash Chandra Bose widely known as Netaji, was an Indian nationalist and prominent figure of the Indian Independence movement, whose attempt during IInd World war to rid India of British rule with the help of Germany and Japan is noteworthy.

Bose was born on 23 January 1897 in Cuttack, Bengal Province to Prabhavathi Devi and Jankinath Bose. He was the ninth in a family of 14 children. He was academically brilliant securing second position in his matriculation exam in school. For higher education, he did his B.A in Philosophy at the Scottish Church College under the University of Calcutta. He even got selected in the Indian Civil Services (ICS) but resigned from his position in 1921 as he didn't wish to serve the British government.

At the age of 16, he became fascinated by the teachings of Swami Vivekananda and Ramakrishna after reading their works. Vivekananda's emphasis on social services and reform had inspired Nose and influenced his socialist political ideology. Subhash Chandra Bose believed that the Bhagwat Gita was a great source of inspirations for the struggle against the British.

Subhash Chandra Bose's first act of defiance against the British was in Presidency college, when he assaulted Professor Oaten, who allegedly made anti-India comments and manhandled Indian students. He was expelled from the college although he officially appealed that he didn't actually participate in the assault.

In 1923, Bose became the President of the All India Youth Congress and then eventually became the Congress President in 1938. He had a fall out with Congress in 1939 and was expelled from his leadership position as Gandhiji and he had differences in their approaches to fighting the British. While he advocated for armed revolution against the British, Gandhiji was adamant on only using non-violent techniques to gain freedom from the colonizers.

He was jailed 11 times during his fight for freedom. His radical activities against the British rule often led him to imprisonment but never deterred him. Before his presidency at INC, Bose had ventured into journalism and started the newspaper 'Swaraj' and later became the editor of the newspaper 'Forward' by Chittaranjan Das, a fellow nationalist from Bengal. He was a progressive thinker and wanted women to enlist in the Indian National Army to fight for their country.

In 1943, while addressing a crowd of Indians in Singapore, he asked for a "unit of brave Indian women to form a 'Death-defying Regiment' who will wield the sword, which the brave Rani of Jhansi wielded in India's First War of Independence in 1857." Since the request was unusual for its time, it received a lot of criticism.

His most famous slogans were "give me blood and I will give you freedom" and "Delhi chalo." INA also used the slogan Inquilab zindabad which was coined by Maulana Hasrat Mohan.

Netaji was flying from Bangkok to Tokyo by plane and is believed that he is died in a plane crash on August 18 1945 , but till date no evidence of netaji's death was found.

Kamana Singh
Bhubaneswar

WHAT I WANT TO BE

What you want to be!
Many ask me
since I can talk
I don't know yet
I say and they are
at shock
why I must decide
so early
I want to enjoy
life is so lovely!

If you have aim,
it helps to focus
but it can be stressful
and can choke us
So, I want to give it a time
To be able to understand
and be clear and define.

For life is full of opportunities
So, many things are
to be explored
may be I would be
able to find
that one has heard of
remained undefined

I am not last or
cannot do
I can do it
and its true
So, If you give me
some time and let it be
then soon shall you see
and that exactly is
what I want to be.

Tushita Swaroop Taksande
Bhubaneswar

TOUCHING LIVES

भुवनेश्वर

'संगिनी' के अक्टूबर - दिसम्बर 2022 अंक का विमोचन करते हुए श्री श्रीधर पात्र, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक महोदय, नालको महिला समिति की अध्यक्षा श्रीमती सस्मिता पात्रा, नालको निदेशकगण, मुख्य सतर्कता अधिकारी तथा संगिनी के संपादन मंडल के सदस्य

नालको स्थापना दिवस के अवसर पर प्राज्ञचक्षु गायिका को सम्मानित करते हुए नालको महिला समिति की अध्यक्षा तथा सदस्याएँ

श्रीमती अलका दास के अभिनन्दन समारोह में उपस्थित नालको महिला समिति की सदस्याएँ

'पखाल दिवस' के अवसर पर नालको महिला समिति की सदस्याएँ मनोरंजन करती हुईं

गाँधी पार्क पुरी का भ्रमण करते हुए नालको परिवार की सदस्याएँ

वार्षिक आधार पर आयोजित किए जाने वाले 'वसन्त पुष्प प्रदर्शनी' के दौरान उपस्थित नालको महिला समिति की अध्यक्षा श्रीमती सस्मिता पात्रा तथा अन्य सदस्याएँ

नालको बागवानी विभाग के कर्मचारियों को प्रोत्साहित करते हुए नालको महिला समिति की अध्यक्षा श्रीमती सस्मिता पात्र

अंतर्राष्ट्रिय महिला दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री सोमेन्द्र प्रियदर्शी, आई.पी.एस., पुलिस आयुक्त का स्वागत करती हुई नालको महिला समिति की अध्यक्षा श्रीमती सस्मिता पात्रा

अंतर्राष्ट्रिय महिला दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम के दौरान नाटक का मंचन करती हुई नालको महिला समिति की सदस्याएँ

ऑनलाइन धोखाधड़ी जागरूकता कार्यक्रम के दौरान श्रोताओं को सम्बोधित करती हुई नालको महिला समिति की अध्यक्षा श्रीमती सस्मिता पात्रा

ऑनलाइन धोखाधड़ी जागरूकता कार्यक्रम के दौरान आईसीआईसीआई बैंक के समूह के साथ उपस्थित नालको महिला समिति की अध्यक्षा श्रीमती सस्मिता पात्रा

ग्रामीणों के स्वास्थ्य देखभाल हेतु मच्छरदानी का वितरण करते हुए नालको महिला समिति की अध्यक्षा श्रीमती सस्मिता पात्रा

नालको महिला समिति द्वारा आयोजित रक्तदान शिविर के अवसर पर नालको महिला समिति की सदस्याओं के साथ अध्यक्षा श्रीमती सस्मिता पात्रा

नालको महिला समिति द्वारा आयोजित रक्तदान शिविर के अवसर पर रक्तदान करते हुए नालको महिला समिति की अध्यक्षा श्रीमती सस्मिता पात्रा तथा श्री रमेश चन्द्र जोशी, निदेशक (वित्त)

अनुगुळ

बीजू पटनायक स्टेडियम में आयोजित गणतंत्र दिवस समारोह में भाग लेती हुई नालको लेडीज क्लब, अनुगुळ की सदस्याएँ

अग्नि सुरक्षा के मायने एवं जागरूकता कार्यक्रम में भाग लेती हुई नालको लेडीज क्लब, अनुगुळ की सदस्याएँ नालको

नालको परिवार की महिलाओं हेतु आयोजित पुष्प रंगोली कार्यक्रम में शामिल होती हुई नालको लेडीज क्लब, अनुगुळ की सदस्याएँ तथा इस अवसर पर बनायी गयी रंगोली

नालको लेडीज क्लब, अनुगुळ की सदस्याओं द्वारा आयोजित 'फ़न डे' कार्यक्रम

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस कार्यक्रम के अवसर पर उपस्थित नालको लेडीज क्लब, अनुगुळ की सदस्याएँ

समाज के कमजोर तबकों के लिए आयोजित स्वास्थ्य शिविर में भाग लेती हुई नालको लेडीज क्लब, अनुगुळ की सदस्याएँ

दामनजोड़ी

दामनजोड़ी के दौरे पर आगमन के अवसर पर नालको महिला समिति की अध्यक्षा श्रीमती सस्मिता पात्रा का स्वागत करती हुए नालको लेडीज क्लब, दामनजोड़ी की सदस्याएँ

दामनजोड़ी आगमन पर स्थानीय निवासियों से मुख़ातिब होती हुईं नालको महिला समिति की अध्यक्षा श्रीमती सस्मिता पात्रा

गणतंत्र दिवस के अवसर पर खान तथा परिशोधन संकुल दामनजोड़ी में आयोजित कार्यक्रम में मेधावी छात्रा को पुरस्कृत करती हुई नालको महिला समिति की अध्यक्षा श्रीमती सस्मिता पात्रा

दामनजोड़ी आगमन पर श्रीमती गीतांजलि बेहेरा का अभिनन्दन करती हुईं नालको लेडीज क्लब, दामनजोड़ी की सदस्याएँ

कथक नृत्य की प्रस्तुति करते हुए नालको लेडीज क्लब, दामनजोड़ी की सदस्या नम्रता श्रीवास्तव

नालको महिला समिति की अध्यक्षा श्रीमती सस्मिता पात्रा के स्वागत समारोह के दौरान एकल नाट्य प्रस्तुति का प्रदर्शन करते हुए नालको लेडीज क्लब, दामनजोड़ी की सदस्या प्रभाती नलिनी साहू

स्वच्छ भारत अभियान में भाग लेती हुईं नालको लेडीज क्लब, दामनजोड़ी की सदस्याएँ

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस कार्यक्रम में भाग लेती हुई नालको लेडीज क्लब, दामनजोड़ी की सदस्याएँ

Readers are requested to send their write ups, suggestions and feedback to nmssangini@gmail.com in clear handwriting or soft copy before 31st May 2023 - Editor-in-Chief

नालको NALCO

National Aluminium Company Limited

Born in ODISHA..
Grown in ODISHA..
Globally Represents ODISHA...

No. 1 Lowest Cost Producer of Alumina in World

No. 1 Lowest Cost Producer of Bauxite in World

2nd Highest Net Foreign Exchange Earning CPSE in the Country

NALCO

THE INDUSTRIAL KONARK OF ODISHA

Designed and printed by sanket